ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

अक्टूबर-२०२१

अक्टूबर-२०२१ ◆ वर्ष १० ◆ अंक ०६ ◆ उदयपुर

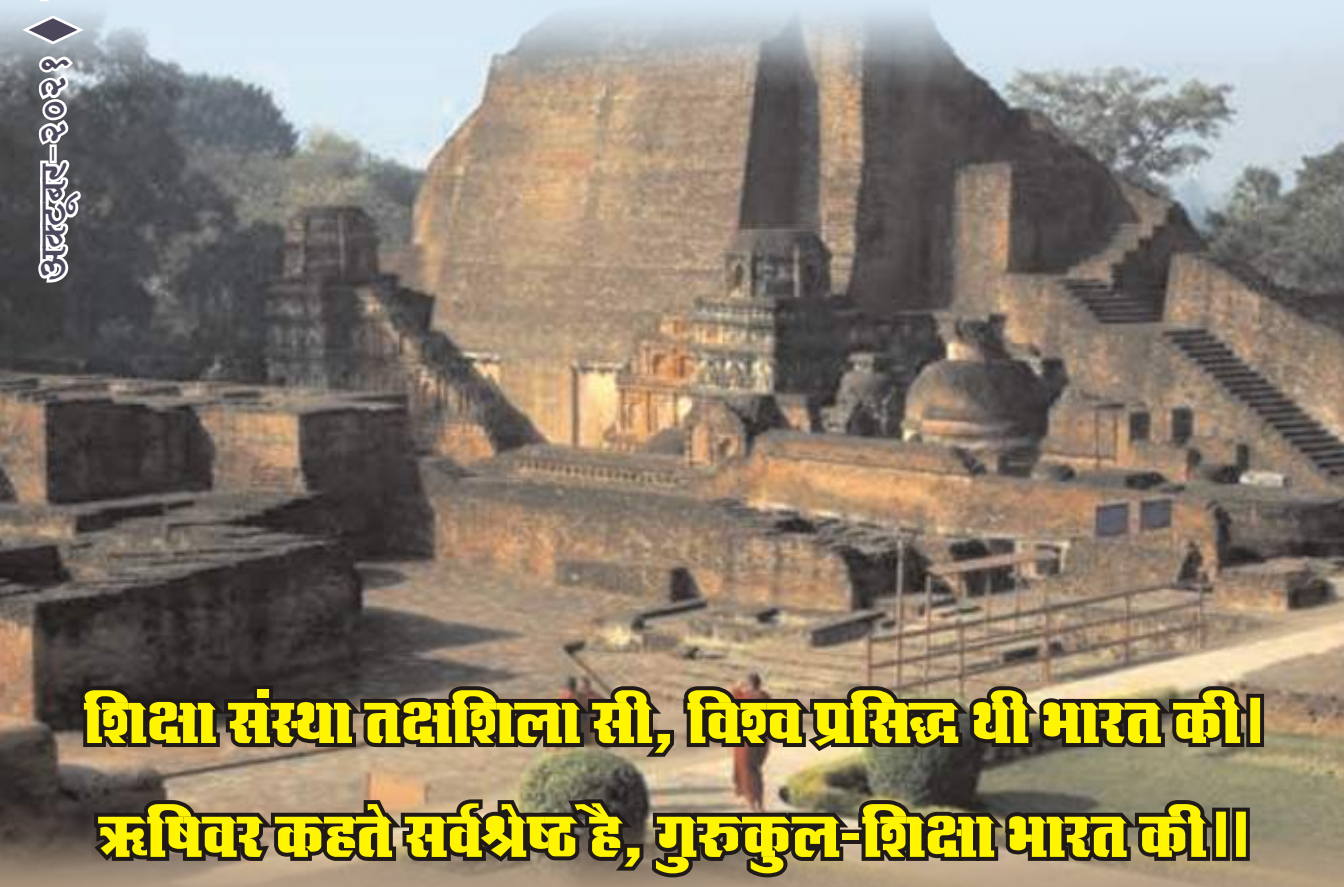

शिक्षा संस्था तक्षशिला सी, विश्व प्रसिद्ध थी भारत की।
ऋषिवर कहते सर्वश्रेष्ठ है, गुरुकुल-शिक्षा भारत की॥

शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति को समर्पित

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० १२०

हमारे सम्पर्क में रहें

शुद्ध खायें, स्वस्थ रहें

MDH

मसाले

सेहत के रखवाले असली मसाले सच - सच

पद्मभूषण

महाशय धर्मपाल जी

संस्थापक चेयरमैन, एम.डी.एच. (प्रा०) लि०

For More Information Visit us on :

mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | mdhspicesofficial | SpicesMdh

www.mdhspices.com

SCAN FOR MDH ORIGINAL RECIPES

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल
डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक
अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक
भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग (ग्राफिक्स डिजाईनर)
नवनीत आर्य (मो.9314535379)

कार्यालय मंत्री
भँवर लाल गर्ग (मो. 7976271159)

सहयोग	भारत	विदेश
संरक्षक	- 11000 रु.	$ 1000
आजीवन	- 1000 रु.	$ 250
पंचवर्षीय	- 400 रु.	$ 100
वार्षिक	- 100 रु.	$ 25
एक प्रति	- 10 रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें। अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया मेन ब्रांच दिल्ली गेट, उदयपुर
खाता संख्या : 310102010041518
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३१२२
आश्विन कृष्ण प्रथमा
विक्रम संवत्
२०७८
दयानन्दाब्द
१९७

October - 2021

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)
कवर 2 व 3 (भीतरी आवरण) रंगीन
3500 रु.
अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	2000 रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	1000 रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	750 रु.

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

समाचार २८
हलचल २९

०४ वेद सुधा
०९ मोपला विद्रोह अथवा हिन्दू नरसंहार
१२ संस्मरण : पं. ओमप्रकाश वर्मा
१५ तालिबानी सोच पर लगे पूर्ण विराम
२२ कविता-भावों की भाषा हिन्दी हूँ।
२३ स्वास्थ्य- लाभकारी है शरद ऋतुचर्या
२५ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०८/२१
२६ कथा सरित- बेला बोस
३० सत्यार्थ पीयूष- योग के अंग

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - १० | अंक -०६

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) 313001
(0294) 4017298, 09314535379, 7976271159
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

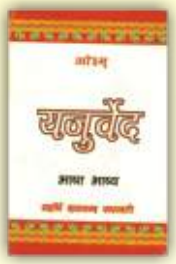

ओ३म्

वेद सुधा

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा सुव।
यद् भद्रं तन्नऽआ सुव। - यजुर्वेद ३०/३

अर्थ- हे **(सवितः)** सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त, **(देव)** शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर! आप कृपा करके **(नः)** हमारे **(विश्वानि)** सम्पूर्ण **(दुरितानि)** दुर्गुण, दुर्व्यसन ओर दुःखों को **(परा सुव)** दूर कर दीजिए और **(यत्)** जो **(भद्रम्)** कल्याणकारक गुण-कर्म-स्वभाव और पदार्थ हैं **(तत्)** वह सब हमको **(आ सुव)** प्राप्त कीजिए।

विज्ञान-

इस मंत्र में उस सच्चिदानन्दानन्तस्वरूप, परमकारुणिक, अनन्तविद्य, विद्याविज्ञानप्रद परमेश्वर के दो सम्बोधनपरक नाम है; एक सवितः और दूसरा देव। दोनों में से किसी को भी पहले और बाद में रख सकते हैं। क्योंकि सब नामों के मुख्य अर्थ से उस परमेश्वर का ही ग्रहण होता है। व्याकरण, निरुक्त, ब्राह्मण-सूत्रादि ग्रन्थों में ऋषि-मुनियों के व्याख्यानों से परमेश्वर का ही ग्रहण होता है।

हे (सवितः) सकल जगत् के उत्पत्तिकर्त्ता, समग्र ऐश्वर्ययुक्त! सकल अर्थात् कलाओं सहित जिससे ईश्वर षोडशी अर्थात् सोलह कलाओं वाला कहा जाता है। ये कलाएँ प्रश्नोपनिषद् के छठे प्रश्न में प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथिवी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म, लोक और नाम से वर्णित हैं।

षोडश वस्तु रूप जगत् परमात्मा में है, उसी ने इस जगत् की उत्पत्ति की है। यह उत्पत्ति-स्थिति-प्रलयात्मक जगत् उस ईश्वर का व्यापार है, उससे पृथक् इस व्यापार का सामर्थ्य किसी में नहीं है; क्योंकि उत्पत्ति-स्थिति-प्रलय करता हुआ वह स्वयं इससे ऊर्ध्व वर्त्तमान है। जिसका सत्य विचारशील ज्ञान और अनन्त ऐश्वर्य है- इसी से वह 'ईश्वर' कहाता है, इसलिए वह समग्र ऐश्वर्ययुक्त है।

'हे (देव) शुद्धस्वरूप, सब सुखों के दाता परमेश्वर।'

जो अविद्या-अज्ञानादि क्लेशों और सब दोषों से सर्वदा पृथक् है, वह शुद्ध और इन दोषों से पृथक् तथा विद्यादि गुणों से वर्तमान जिसका स्वरूप है, वह शुद्धस्वरूप परमात्मा सूर्यादि सर्व जगत् का और विद्या का प्रकाश करने तथा सब आनन्दों का देने वाला होने से सब सुखों का दाता 'देव' कहलाता है।

'आप कृपा करके (नः) हमारे (विश्वानि) सम्पूर्ण (दुरितानि) दुर्गुण, दुर्व्यसन और दुःखों को दूर कर दीजिए।'

व्याख्या- मंत्रगत शब्दों में यह 'कृपा करके' कहीं पर नहीं है। पर मंत्र निहित अभिप्राय को प्रकट करने के लिए ऋषि का यह ऊहित है, जो बहुत सारगर्भित तथ्य को स्पष्ट करता है। जब स्तुति से ईश्वर में प्रीति, उसके गुण-कर्म-स्वभाव से अपने गुण-कर्म-स्वभाव को सुधारना, प्रार्थना से-निरभिमानता, उत्साह और सहाय को प्राप्त करते हुए परब्रह्म से मेल और उसके साक्षात्कार होने की इच्छा से योग-उपासना करता है, अर्थात् उपासक अपने मन को ईश्वर से युक्त करता है, तब वह 'सविता' परमेश्वर उस उपासक की बुद्धि को अपने से युक्त करता है, यही उस परमेश्वर की कृपा है। इसीलिए ऋषि ने लिखा कि- 'आप कृपा करके हमारे सम्पूर्ण दुरित दूर कर दीजिए।'

दुरित शब्द अनेक अर्थों में वेदों में प्रयुक्त हुआ है। यथा- दुःसह, दुर्बोध, दुर्ज्ञेय, दुर्बुद्धि, दुष्कर्म, दुष्कृत, दुष्पथ, दुर्मार्ग इत्यादि। परन्तु इस प्रकृत मंत्र में दुर्=पाप दुर्गति और उस दुर्गति से पापगमन=पापाचरण प्रवृत्तियाँ इस अर्थ में दुःख, वे 'दुरितानि' दुष्टाचरणानि हैं। इन सब दुरितों को आप कृपा करके 'दूरे प्रक्षिप'=निवारय=दूरे गमय अर्थात् दूर कीजिए या दूर कर दीजिए। ईश्वर की स्तुति अर्थात् अत्यन्त प्रीति से उसके गुण-कर्म-स्वभावानुसार अपने गुण-कर्म-स्वभाव सुधारकर अब याचना करता है कि- 'यद् भद्रं तन्न आसुव' अर्थात् जो कल्याणकारक है, वह सब प्राप्त कीजिए।

प्रश्न उत्पन्न होता है कि कल्याणकारक क्या है? तो उत्तर यह है- जो सर्वदुःखरहित, सत्यविद्या प्राप्ति से अभ्युदय और निःश्रेयस जो भद्र है, वह कल्याणकारक है, जो कि सब सुखों से युक्त भोग है। सुख दो प्रकार का है- एक जो सत्यविद्या की

प्राप्ति में चक्रवर्ति राज्य, इष्ट मित्र, धन, पुत्र, स्त्री और शरीर से अत्यन्त सुख का होना; और दूसरा जो निःश्रेयस सुख है, जिसको मोक्ष कहते है; जिसमें ये दोनों होते हैं, वह 'भद्र' कहाता है। जो उत्तम गुण-कर्म-स्वभाव और पदार्थ तथा धर्म्याचरण हैं, वह सब अपनी कृणा से=कृपा करके हम सबको= हमारे लिए सब ओर से प्राप्त कीजिए अर्थात् उत्पन्न कीजिए। उपासक यह क्यों कह रहा है कि आप हमारा 'भद्र' कीजिए? उत्तर- उपासक जानता है कि वह मेरा कल्याण करेगा। प्रमाणस्वरूप-

यदंग दाशुषे त्वमग्ने भद्रं करिष्यसि।
तवेत्तत्सत्यमंगिरः।। - ऋग्वेद १/१/६

हे अग्ने! प्राप्ति होने के योग्य ईश्वर! (अङ्ग) हे सबके परममित्र। (दाशुषे) जो मनुष्य आपको आत्मा, प्राण आदि उत्तम पदार्थ समर्पण करता है, उस अत्यन्त प्रेम करने वाले मनुष्य के लिए (भद्रम्) परमानन्द स्वरूप जो मोक्षसुख है, उसको तुम हे अग्नि! (करिष्यसि) करोगे अर्थात् यह उपासक का तथा हमारा दृढ़ निश्चय है। हे (अङ्गिरः) प्राणों के सारभूत अर्थात् प्राणों के प्राण अन्तर्यामी परमेश्वर! यह आपका ही सत्य अनिवाशी स्वभाव है (तवेतत्सत्यम्) यह सामर्थ्य अन्य किसी का नहीं।

कुछ सिद्धान्तानभिज्ञ महानुभावों ने 'प्राप्त कीजिए' के स्थान पर बदलकर 'प्राप्त कराइये' कर दिया। ऐसा करने से मंत्रगत समस्त अभिप्राय ही मिट जायेगा। 'प्राप्त कराइये' अर्थ है- वह ईश्वर उस उपासक से पृथक् है। तब उसको कहा जा रहा है कि- आप हमें प्राप्त कराइए। और दूसरा प्राप्त कराते समय वा प्राप्त कराके भी वह उस जीव से पृथक् है- अर्थात् व्याप्य-व्यापक सम्बन्ध नहीं है। परन्तु 'प्राप्त कीजिए' का अर्थ है- जैसे लोहे में व्यापक अग्नि! लोहा-व्याप्य और अग्नि-व्यापक। इस स्वीकृति में अग्नि के सब गुण लोहे में विद्यमान हैं। लोहे का प्रत्येक कण अग्नि सदृश है। न यहाँ अग्नि लोहे से पृथक् है और न लोहा अग्नि से पृथक् है, दोनों व्याप्य और व्यापक हैं। अग्नि ने अपने गुणों से लोहे को निरन्तर प्राप्त किया हुआ है, इसी प्रकार ईश्वर भी अपने गुणों के साथ जीव को प्राप्त किए हुए हैं। इसीलिए ऋषि ने यहाँ लिखा है कि- 'वह सब हमको प्राप्त कीजिए।' भावार्थ यह है कि उपासित=उपासना किया हुआ जगदीश्वर अपने भक्तों को दुष्टाचरण से निवृत्त कर, श्रेष्ठ आचरण में प्रवृत्त करता है।

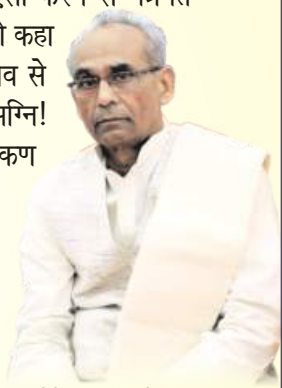

- आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
२४३, अरावली अपार्टमेन्ट, अलखनन्दा, नई दिल्ली
साभार- उपासना-विज्ञान

विश्व भर से आने वाले दर्शकों के नवलखा महल, उदयपुर के बारे में विचार

राठौड़ (वाल्मीकि) जन कल्याण सेवा संस्थान के प्रतिनिधिमंडल को श्री विनोद कुमार जी राठौड़ के माध्यम से आज नवलखा महल आने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ। हम आज तक जिन चीजों से अनजान थे वह यहाँ आकर देखा समझा यानी कि जो स्वर्ग का नाम सुना था वह यहाँ पर हमने महसूस किया। हम महर्षि दयानन्द जी को शत-शत नमन करते हैं जिन्होंने मानवता एवं मानव धर्म के लिए पवित्र कार्य किये। और यहाँ के जो युवाओं को संस्कार देने के कार्यक्रम हैं वह देश और देशवासियों के विकास के लिए मील का पत्थर साबित होंगे ऐसा मेरा मानना है। मैं यहाँ के सभी कार्यकर्त्ताओं का भी हृदय से साधुवाद करता हूँ।

- श्री लाल चन्द राठौर, महामंत्री

सबसे सुन्दर व प्रेरणादायी स्मारक के विकास में अपना सहयोग प्रदान करें।

आत्म निवेदन

सौन्दर्य तथा आकर्षक से युक्त चीजें व्यक्ति को स्वभावतः प्रभावित करती हैं। अतः किसी भी स्मारक का बाहरी स्वरूप मनमोहक है तो पर्यटक उसमें रुचि दिखाता है, प्रवेश करने का मानस बनाता है यह बात निर्विवाद है। और जब वह परिसर में आता है तब नूतन विधाओं के माध्यम से संस्था का सन्देश देना, उसे प्रेरित करता है। पर्यटकों के इस मानव स्वभाव का वर्षों तक अनुभव करने के पश्चात् सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, उदयपुर का विकास, नवीनीकरण, इसी आधार पर किया जा रहा है, जिसकी कुछ संक्षिप्त चर्चा गतांक में की थी।

आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा, ३डी थियेटर तथा संस्कार वीथिका वे प्रमुख प्रकल्प हैं जो दर्शकों की अभिरुचि के अनुसार निर्मित हो चुके हैं/निकट भविष्य में पूर्ण हो रहे हैं, जो कुल मिलाकर एक घण्टे का मंत्रमुग्ध कर देने वाला चित्रण दर्शकों के समक्ष करने में समर्थ होंगे।

महल का बाहरी स्वरूप

नवलखा महल की बाहरी दीवार को अत्यन्त सुन्दर, चित्ताकर्षक और थीम वेस्ड बनाने का विचार है। थीम होगा वेद। वर्त्तमान में नवलखा महल के ५ दरवाजे हैं। चार सदैव बन्द रहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाय तो अनुपयुक्त हैं। इन चारों के स्थान पर पत्थर या अन्य किसी उपयुक्त पदार्थ का उपयोग कर चारों ऋषियों जिन पर सृष्टि की आदि में वेदज्ञान का आविर्भाव हुआ था उनकी छवि मुराल वर्क, पत्थर शिल्प अथवा अन्य मनोहारी विधा में (3d में) उकेरित करवाया जायेगा। इसके साथ लगी सम्पूर्ण दीवार में यथास्थल पत्थर के नक्काशीदार खम्बे होंगे। इनके मध्य की दीवार पर वेद मन्त्रों के सत्य अभिप्राय को उत्कीर्ण करते हुए ३डी में चित्रित किया जायगा। उदाहरण के तौर पर- 'द्वासुपर्णा सयुजा सखाया .....' को दर्शाने हेतु एक वृक्ष का निर्माण हो, जिस पर दो पक्षी बैठे हों, एक फल खा रहा हो तथा दूसरा केवल देख रहा हो, मात्र दो पंक्तियों में त्रैतवाद के सिद्धान्त को दर्शा दिया जाय। वेद में अनेक मन्त्र प्रहेलिकात्मक हैं। उनमें से कुछ का चयन कर उनके रहस्य को इसी प्रकार खोला जाय। इसी प्रकार तिब्बत में आदि सृष्टि के तथ्य को और वहाँ चार ऋषियों के आत्मा में वेदज्ञान के प्रादुर्भाव की सच्चाई को दर्शाते हुए उससे वेदांगों और अन्य आर्ष साहित्य के निगमन को निरूपित किया जाय, यह सम्पूर्ण थीम ३डी में हो, प्रकाश का संयोजन अद्भुत हो तो दर्शक हटात् रुककर उत्कण्ठा लिये परिसर प्रवेश हेतु बाध्य हो जायेगा ऐसा विश्वास है। यह अभी केवल विचार है। उपयुक्त विद्याधिकारियों से चर्चा कर इसे अन्तिम रूप दिया जाएगा। यह जहाँ नवलखा के बाह्य स्वरूप को भव्य व मनोहारी बनाएगा वहीं वैदिक संस्कृति के मूल तत्वों को उकेरित करेगा।

स्वागत कक्ष तथा विक्रय केन्द्र

वर्त्तमान में भवन में कोई सुव्यवस्थित स्वागत कक्ष नहीं है तथा विक्रय केन्द्र भी पुराने ढंग का है। इसे अत्यन्त आकर्षक रूप देने का विचार है। महल के मुख्य दरवाजे से अन्दर घुसते ही दाहिनी ओर नक्काशीदार दीवार बनायी जायेगी जिसके आगे प्रकाश व्यवस्था की समुचित व आदर्श व्यवस्था के साथ आधुनिक एयरपोर्ट के पुस्तक केन्द्रों की तर्ज पर विक्रय केन्द्र विकसित किया जाएगा। इसके समक्ष ही अर्थात् प्रवेश द्वार के बायीं ओर स्वागत कक्ष जिसमें सोफा, सेन्टर टेबल आदि होंगी, बनाया जाएगा। जहाँ दर्शक न सिर्फ बैठकर प्रतीक्षा कर सकेंगे वरन् इस समय में सामने लगी एल.ई.डी. पर न्यास की, इसके न्यासियों की, इसके दानदाताओं की, इसकी व्यवस्था तथा उद्देश्यों की तथा आर्यसमाज के नियमों तथा सिद्धान्तों से सम्बन्धित व्यवस्थित तथा उपयोगी सामग्री देख सकेंगे।

भारत गौरव दर्शन

हमने अनेक बार अत्यन्त पीड़ा से अनुभव किया है कि आज की पीढ़ी वास्तविक राष्ट्र निर्माताओं के बारे में पूर्णतः अनभिज्ञ है। दोष उनका नहीं। उन्हें कभी बताया/पढ़ाया ही नहीं गया। स्वतंत्रता सेनानियों के सम्बन्ध में भी चंद नामों के अतिरिक्त वे सहस्रों नाम अज्ञात हैं जिन्होंने अपनी किशोरावस्था में ही अपने जीवन को राष्ट्र की बलिवेदी पर न्यौछावर कर दिया। आज हम स्वतंत्र हवा में श्वांस ले रहे हैं तो उसका श्रेय उन गुमनाम शहीदों और महापुरुषों को जाता है। हम चाहते हैं कि प्रत्येक दिन कम से कम उस दिन से सम्बन्धित एक महानात्मा का दिग्दर्शन चित्र, व्यक्तित्व व कृतित्व सहित कराया जाय। यह कार्य एक विशाल एल.ई.डी के माध्यम से करने का विचार है। प्रत्येक बदलती दिनांक के साथ एक नया नाम दर्शकों के मध्य आएगा और वे उस महान् विभूति का परिचय प्राप्त कर सकेंगे। इसी प्रकल्प को हमने भारत-गौरव-दर्शन के नाम से सम्बोधित किया है। और इसे अपना पावन कर्तव्य समझा है अतः श्रमसाध्य होते हुए भी इस संकलन में लगे हैं।

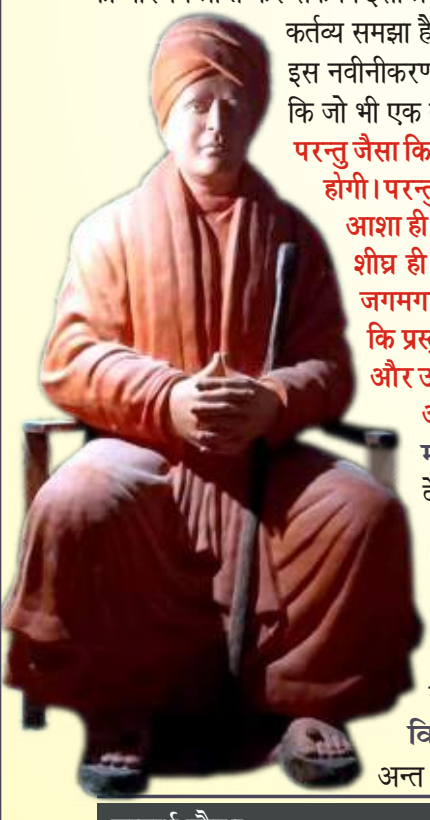

इस नवीनीकरण हेतु जो विचार मन में हैं, उनके मूर्त्तरूप ले लेने के पश्चात् ऐसा मानना अनुचित न होगा कि जो भी एक बार नवलखा के सामने से गुजरेगा, वह हटात् इसके अन्दर आने को बाध्य हो जाएगा।

परन्तु जैसा कि सभी जानते हैं धन के बिना कुछ हो नहीं सकता, इसके लिए भी प्रचुर धन की आवश्यकता होगी। परन्तु यह निश्चय है कि कल्पना जब भी हकीकत बनेगी, नयनाभिराम होगी, अद्वितीय होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पूर्व की भाँति आप सभी के सहयोग से और परमात्मा की कृपा से शीघ्र ही यह योजना भी निश्चित पूर्ण होगी और तब यह भव्य भवन और भी प्रेरक हो करके जगमगाएगा ऐसा निश्चय है। बस यही है कि आप न्यास की पूर्व प्रगति को देखकर यह विश्वास रखें कि प्रस्तुत योजना भी और सुन्दर स्वरूप में आकार लेगी, अतः इस निमित्त अपनी दानशीलता और उदार भावों की वर्षा करते हुए श्रद्धा व सामर्थ्य के अनुसार अर्थ सहयोग अवश्य प्रदान करें। आपका यह सहयोग धारा ८०जी के अन्तर्गत करमुक्त है।

महर्षि का स्टेच्यू

देश, काल के अनुसार सिद्धान्तों में तनिक भी समझौता किए बिना विविध विधाओं के द्वारा अधिकाधिक जनों को आकर्षित कर उन्हें प्रेरणा दी जाय, यह न्यास का विचार है। अतः 'मूर्त्तिपूजा' की स्थिति के लिए लेशमात्र भी अवकाश न हो, इसे सुनिश्चित करते हुए ७ फीट ऊँचा महर्षिवर देव दयानन्द का भव्य स्टेच्यू बनवाया जा रहा है, जो भीतरी चौक में अवस्थित 'संस्कार वीथिका' में प्रवेश करते ही, महर्षि दयानन्द के व्यक्तित्व व कृतित्व के सन्दर्भ में, दर्शकों में श्रद्धाभाव का संचरण करेगा।

विद्यार्थियों को लाने हेतु बस की व्यवस्था

अन्त में निवेदन करना चाहूँगा कि आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा और नवनिर्मित सुरेशचन्द्र दीनदयाल

आर्य चलचित्रालय में दिखायी जाने वाली लघु फिल्में व **दीनदयाल सुरेशचन्द्र आर्य संस्कार वीथिका परिसर** में स्थित वैदिक संस्कार केन्द्र, भारत के भावी नागरिकों को अधिकाधिक प्रेरणा दे सकें, इस हेतु अत्यन्त आवश्यक व अपरिहार्य है कि उदयपुर नगर और आसपास के क्षेत्र के विद्यालयों के जो लाखों विद्यार्थी हैं उनको हम इन योजनाओं से जोड़ें। इस हेतु विगत चार-पाँच वर्षों से अनथक प्रयत्न करने पर यह सामने आया है कि अधिकांश विद्यालयों के पास अपने निज के साधन नहीं है अतः वे चाहते हैं कि अगर उन्हें एक बस बच्चों के लाने ले जाने के लिए उपलब्ध करा दी जाए तो वह बच्चों को यहाँ भेजकर प्रसन्न ही होंगे।

तो इन प्रयासों से विद्यार्थियों को जोड़ने के लिए बस की अनिवार्यता प्रकट हुई। परन्तु पुनः इसके लिए भी अर्थ चाहिए। परन्तु यह समझते हुए कि प्रतिदिन २०० विद्यार्थियों की उपस्थिति इस बस के होने पर होना सुनिश्चित हो जाएगी और इस प्रकार ३६५ दिनों में लगभग ७५००० से भी अधिक विद्यार्थी वैदिक सन्देश ग्रहण कर सकेंगे, इस दिशा में प्रयास अवश्य करने चाहिए।

हमें आशा है कि ऐसे दानदाताओं का अभाव नहीं होगा जो न्यास को एक बस उपलब्ध करा सकेंगे, केवल बात आवश्यकता को, उपयोगिता को समझने मात्र की है और मुझे विश्वास है कि न्यास की गतिविधियों से परिचित होने के पश्चात् यह देखते हुए कि न्यास द्वारा जो भी जब कहा गया वह पूरा हुआ, उस प्रकल्प का पूरा उपयोग भी हो रहा है, उसी प्रकार अब भी जैसा संकल्प लिया गया उसके अनुसार आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा, चलचित्रालय व संस्कार वीथिका अपने भव्यरूप में उपलब्ध हैं, उनका लाभ लेने के लिए (इस अनुदान का उपयोग व सार्थकता स्पष्ट होने पर) आर्य दानी महानुभाव सहयोग के लिए समुत्सुक होंगे ऐसा विश्वास है।

महर्षि दयानन्द शयन कक्ष

जिस कक्ष में बैठकर महर्षि जी सत्यार्थ प्रकाश लिखवाते थे, उस कक्ष में अब अत्यन्त सुन्दर १४ कोणीय तथा १४ मंजिला कांच का बना घूमता हुआ सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ सुशोभित हो सत्यार्थप्रकाश की ११२ शिक्षाओं का प्रकाश कर रहा है। परन्तु महर्षि दयानन्द का शयन कक्ष अभी दर्शकों को अलभ्य है।

बहुत से बन्धु देखना चाहते हैं, परन्तु उस तक जाने का रास्ता या तो लाइब्रेरी में हो करके जाता है या फिर अति अनगढ़ कमरों में से होकर जाता है अतः शोभायमान नहीं लगता। लाइब्रेरी को थोड़ा सुव्यवस्थित और सुन्दर बना दिया जाए तो उधर से यह व्यवस्था हो सकती है। महर्षि जी के शयनकक्ष को भी व्यवस्थित करने की महती आवश्यकता है। **इस सब में अनुमानित ₹ 500000 का व्यय है, आप लोगों की अनुकम्पा होने पर यह आवश्यक कार्य भी हो सकेगा।**

कतिपय बातें जो अभी मन में हैं उन पर यह सोचकर विराम दे रहा हूँ कि आप सभी उदारमनाओं को यह ना लगने लगे कि यह तो योजनाओं का अम्बार है और याचिकाओं की कोई कमी ही नहीं है। इसलिए अपनी बात को विराम देते हुए पुनः एक बार माननीय दीनदयाल जी आर्य और सुरेश चन्द्र जी आर्य के चरणों में धन्यवाद के पुष्प अर्पित करता हूँ और अन्य सभी न्यासी बन्धुओं से निवेदन करता हूँ कि आप स्वयं अथवा अपने प्रयासों से शेष बची योजनाओं को मूर्त्तरूप देने में अपना सहयोग प्रदान करें। एक बार पुनः धन्यवाद।

आपका ही- अशोक आर्य (अध्यक्ष-न्यास)
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०८००५८०८४८५

मोपला विद्रोह अथवा हिन्दू नरसंहार

अनुपम कुमार सिंह

केन्द्र सरकार ने मालाबार 'विद्रोह' में शामिल लोगों के नाम भारतीय स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों की सूची से हटाने का निर्णय लिया है। सरकार के निर्णय के अनुसार सूची से ३८७ ऐसे लोगों के नाम हटाए जाएँगे जिन्हें अब तक स्वतंत्रता सेनानी माना जाता रहा। भारत सरकार की डिक्शनरी आफ मार्टियर्स से इन नामों को इंडियन काउंसिल फॉर हिस्टोरिकल रिसर्च की एक समिति द्वारा की गई सिफारिश के बाद हटाया जा रहा है। समिति का मानना है कि १९२१ के इस तथाकथित विद्रोह में अंग्रेजों के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं की गई और न ही राष्ट्रवाद के पक्ष में कोई नारे लगाए गए। ऐसे में सरकार द्वारा उठाया गया इस कदम का स्वागत होना चाहिए क्योंकि किसी भी सभ्यता या राष्ट्र के लिए यह आवश्यक है कि ऐतिहासिक घटनाओं को तथ्यों के परिप्रेक्ष्य में देखा जाए न कि कहानियों के परिप्रेक्ष्य में। तथ्य यही बताते रहे हैं कि १९२४ का मालाबार विद्रोह अंग्रेजों के खिलाफ नहीं था। यह किसी से छिपा नहीं है कि महीनों तक चले हिन्दुओं के योजनाबद्ध नरसंहार में तथाकथित मोपला स्वतंत्रता सेनानियों ने दस हजार से अधिक हिन्दुओं की हत्या की थी। इस्लामिक प्रोपेगंडा के तहत दशकों का स्थापित नैरेटिव चाहे जो बताए पर तथ्य यह बताते हैं कि मोपलाओं ने हिन्दुओं की हत्या, हिन्दू महिलाओं का बलात्कार और लूटपाट किया तथा हजारों हिन्दुओं को धर्म परिवर्तन के लिए बाध्य किया।

ऐसे में एक आम भारतीय के लिए यह आज भी आश्चर्य की बात होगी कि मालाबार में हुए हिन्दुओं के इस नरसंहार को अंग्रेजों से स्वतंत्रता पाने की लड़ाई कैसे कहा गया? यह प्रश्न तब और प्रासंगिक हो जाता है जब हमारी दृष्टि वर्षों की सरकारी सहायता से बुनी गई उन कहानियों पर जाती है जिनमें इस नरसंहार को न्यायसंगत ठहराने के लिए कुछ भी लिख दिया गया और हिन्दुओं के पास इन कहानियों के विरुद्ध केवल कुढ़ने के सिवाय और कुछ नहीं था।

सरकार का यह कदम आवश्यक है और तर्कसंगत भी। स्वतंत्रता के पहले या उसके बाद दशकों तक ऐतिहासिक तथ्यों को नकारते हुए जो कहानियाँ बुनी गई हैं उन्हें तथ्यों की कसौटी पर कसना सरकार या बुद्धिजीवियों का कर्तव्य और आम भारतीय का अधिकार है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा १४ अगस्त को विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में मनाए जाने की घोषणा इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। साथ ही केन्द्र सरकार द्वारा लिखित इतिहास को जाँचने, जानने और उसके पुनर्लेखन के प्रयासों की प्रक्रिया भी एक ऐसा ही कदम है जिसकी आवश्यकता थी।

हर सरकार की प्रशासनिक और नैतिक जिम्मेदारी है कि वह राष्ट्र के विद्यार्थियों को सही इतिहास की शिक्षा सुनिश्चित करे। सरकार के ऐसे प्रयासों का विरोध होगा, उस पर बहस होगी पर यह एक सामान्य बात है। किसी भी बदलाव की प्रक्रिया विरोध से ही शुरू होती है। सरकार को ऐसे हर सम्भावित विरोध का पता होगा और प्रक्रिया के आड़े आने वाले विरोधियों का सन्देह दूर करना सरकार की जिम्मेदारी है।

आवश्यक नहीं कि केन्द्र या राज्य सरकारें हर प्रयास का हिस्सा बनें पर जहाँ तक सम्भव हो, उन्हें इस प्रक्रिया में अपनी भूमिका निर्धारित कर, उसे पूरा करने का प्रयास अवश्य करना चाहिए। इस दिशा में जो शुरुआत हुई है वह आगे चलकर और तीव्र हो, यह आवश्यक है। स्वतंत्र सार्वजनिक विमर्शों में स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ अन्य ऐतिहासिक घटनाओं में तमाम संस्थाओं, व्यक्तियों और नेताओं की भूमिका का पुनर्मूल्यांकन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे सूचना क्रान्ति के इस युग में न तो कोई सरकार रोक सकती है और न ही राजनीतिक दल।

न सिर्फ अंग्रेजों की नीति मुस्लिम तुष्टिकरण की रही थी, बल्कि महात्मा गाँधी जैसे नेता तक ने 'खिलाफत आन्दोलन' का समर्थन करके हिन्दुओं के कत्लेआम की तरफ से आँख मूँद लिया। मोपला हिन्दू नरसंहार को अक्सर 'मालाबार विद्रोह', या अंग्रेजी में Rebellion कह कर सम्बोधित किया गया। केरल भाजपा के अध्यक्ष रहे कुम्मनम राजशेखरन की मानें तो १९२४ में हुई ये घटना राज्य में 'जिहादी नरसंहार' की पहली वारदात थी।

आज केरल में मुस्लिमों की जनसंख्या २७% के आसपास है। यहाँ की पार्टी 'मुस्लिम लीग (IUML)' के पास १५ विधानसभा सीटें हैं। राज्य से आतंकी संगठन ISIS में जाने वालों की अच्छी-खासी संख्या है। अब तो तालिबान में भी 'मलयालियों' के होने की बात खुद काँग्रेस सांसद शशि थरूर ने कही है। यहाँ के ईसाई भी 'लव जिहाद' से पीड़ित हैं। असल में केरल में इस्लामी कट्टरपन्थ की जड़ें इतिहास में ही हैं।

मोपला हिन्दू नरसंहार के बारे में वामपन्थी इतिहासकार

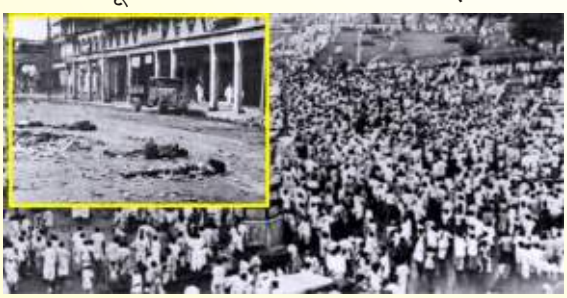

कहते हैं कि ये अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह था। अगर ऐसा था, तो फिर मन्दिर क्यों ध्वस्त किए गए थे? अगर ये 'स्वतंत्रता संग्राम' था, तो भारत के ही लोगों को अपनी ही धरती छोड़ कर क्यों भागना पड़ा था जिहादियों के डर से? वामपन्थी इसे 'मप्पिला मुस्लिमों का सशस्त्र विद्रोह' कहते हैं। अगर ये विद्रोह था तो इसमें सिर्फ मुस्लिम ही क्यों थे? बाकी धर्मों के लोग क्यों नहीं थे? भारत के कई अन्य क्षेत्रों की तरह ही केरल में भी इस्लाम अरब से ही आया था। अरब के व्यापारी वहाँ आया करते थे और इस तरह ९वीं शताब्दी में वहाँ इस्लाम का पनपना शुरू हुआ। कई गरीब हिन्दुओं का धर्मांतरण हुआ। अरब के जो व्यापारी यहाँ बसे, उनका वंश भी फला-फूला। इस तरह केरल में मुस्लिमों की जनसंख्या बढ़ती चली गई।

ये वही इलाका था, जहाँ हैदर अली और उनके बेटे टीपू सुल्तान ने हमले किए। पहले से ही पुर्तगाली यहाँ जमे हुए थे। ऊपर से मैसूर के आक्रमण ने यहाँ के हिन्दुओं को पलायन के लिए मजबूर किया। हिन्दुओं को जम कर लूटा गया था। लोगों को इससे भी हैरानी थी कि यहाँ 'मप्पिला मुस्लिमों' की जनसंख्या कैसे अचानक इतनी बढ़ गई कि वो हावी हो गए। दो ही कारण हैं - अनियन्त्रित परिवार विस्तार और गरीब हिन्दुओं का बड़ी संख्या में धर्मांतरण।

१९२१ में दक्षिण मालाबार में कई जिलों में मुस्लिमों की जनसंख्या सबसे ज्यादा थी। कुल जनसंख्या का वो ६०% थे। अब वो समय आया जब महात्मा गाँधी ने मुस्लिमों का 'विश्वास जीतने' के लिए 'खिलाफत आन्दोलन' को काँग्रेस का समर्थन दिला दिया। 'खिलाफत' मतलब क्या? ये आंदोलन ऑटोमन साम्राज्य को पुनः बहाल करने के लिए हो रहा था। तुर्की के खलीफा को पूरी दुनिया में इस्लाम का नेता नियुक्त करने के लिए हो रहा था।

न भारत को तब तुर्की से कोई लेनादेना था और न ही ऑटोमन साम्राज्य से। लेकिन, महात्मा गाँधी ने मुस्लिमों को काँग्रेस से जोड़ने के लिए उनके एक ऐसे अभियान का समर्थन कर दिया, जिसके दुष्परिणाम हिन्दुओं को भुगतने पड़े। वो १८ अगस्त, १९२० का समय था जब महात्मा गाँधी 'खिलाफत' के नेता शौकत अली के साथ मालाबार आए। वो

'असहयोग आन्दोलन और खिलाफत' के लिए ' जागरूक' करने आए थे।

यहाँ भी महात्मा गाँधी ने हिन्दुओं को 'ज्ञान' दिया। कालीकट

में २०००० की भीड़ के सामने बोलते हुए उन्होंने कहा कि अगर 'खिलाफत' के मामले में न्याय के लिए भारत के मुस्लिम 'असहयोग आन्दोलन' का समर्थन करेंगे तो हिन्दुओं का भी फर्ज बनता है कि वो अपने 'मुस्लिम भाइयों' के साथ सहयोग करें। जून १९२० में महात्मा गाँधी के कहने पर ही मालाबार में 'खिलाफत कमिटी' बनी। इसके बाद वो काफी सक्रिय हो गई।

महात्मा गाँधी भी इस भुलावे में जीते रहे कि मुस्लिमों ने 'असहयोग आन्दोलन' का समर्थन कर दिया है। लेकिन, इससे ये जरूर हुआ कि 'खिलाफत' की आग में मोपला मुस्लिमों ने हिन्दुओं का बहिष्कार शुरू कर दिया। हिन्दुओं को निशाना बनाया गया। उनकी घर-सम्पत्तियों व खेतों को तबाह कर दिया गया। कइयों का जबरन धर्मांतरण करा दिया गया। काँग्रेस पार्टी ने अंग्रेजों पर दोष मढ़ कर इतिश्री कर ली। हिन्दुओं को बचाने कोई नहीं आया।

हाँ, वामपन्थी नेता खासे खुश थे। सौम्येन्द्रनाथ टैगोर जैसे कम्युनिस्ट नेताओं ने इसे 'जमींदारों के खिलाफ विद्रोह' बताया। इतिहासकार स्टेफेन फ्रेडरिक डेल ने स्पष्ट लिखा है कि ये 'जिहाद' था। उनका कहना है कि यूरोपियनों व हिन्दुओं से लड़ते हुए 'जिहाद' की प्रकृति तो मोपला मुस्लिमों में काफी पहले से थी। उनका कहना था कि आर्थिक स्थिति से इस नरसंहार का कोई लेनादेना नहीं था। देश में कई 'किसान आन्दोलन' हुए, लेकिन ऐसे आन्दोलन में धर्मांतरण का क्या काम?

इसमें सबसे विवादित नाम आता है वरियाम कुननाथ कुंजाहमद हाजी का, जो इस पूरे नरसंहार का सबसे विवादित शख्सियत है। वो मालाबार में 'मलयाला राज्यम' नाम से एक इस्लामी सामानान्तर सरकार चला रहा था। 'इस्लामिक स्टेट' की स्थापना करने वाला कोई व्यक्ति स्वतंत्रता सेनानी कैसे हो सकता है? 'द हिन्दू' अखबार को पत्र लिख कर उसने हिन्दुओं को भला-बुरा कहा था। अंग्रेजों ने उसे मौत की सजा दी थी। अब उस पर फिल्म बना कर उसके महिमामण्डन की तैयारी हो रही है।

हाजी के अब्बा ने भी कई दंगे किए थे, जिसके बाद उसे मक्का में प्रत्यर्पित कर दिया गया था। मोपला दंगे के दौरान कई हिन्दू महिलाओं का रेप भी किया गया था मन्दिरों को ध्वस्त किया गया था। बाबासाहब भीमराव अम्बेडकर ने 'Pakistan or The Partition of India' में लिखा है कि मोपला दंगा दो मुस्लिम संगठनों ने किया था।

इनके नाम हैं- 'खुद्दम-ए-काबा (मक्का के सेवक)' और

सेन्ट्रल खिलाफत कमिटी। उन्होंने लिखा है कि दंगाइयों ने मुस्लिमों को ये कह कर भड़काना शुरू किया कि अंग्रेजों का राज 'दारुल हर्ब (ऐसी जमीन जहाँ, अल्लाह की इबादत की इजाजत न हो)' है और अगर वो इसके खिलाफ लड़ने की ताकत नहीं रखते हैं तो उन्हें 'हिजरत (पलायन)' करनी चाहिए। अम्बेडकर ने लिखा है कि इससे मोपला मुस्लिम भड़क गए और उन्होंने अंग्रेजों को भगा कर इस्लामी राज्य की स्थापना के लिए लड़ाई शुरू कर दी।

डॉक्टर अम्बेडकर लिखते हैं, 'अंग्रेजों के खिलाफ को तो जायज ठहराया जा सकता है, लेकिन मोपला मुस्लिमों ने मालाबार के हिन्दुओं के साथ जो किया वो विस्मित कर देने वाला है। मोपला के हाथों मालाबार के हिन्दुओं का भयानक अंजाम हुआ। नरसंहार, जबरन धर्मांतरण, मन्दिरों को ध्वस्त करना, महिलाओं के साथ अपराध, गर्भवती महिलाओं के पेट फाड़े जाने की घटना, ये सब हुआ। हिन्दुओं के साथ सारी क्रूर और असंयमित बर्बरता हुई। मोपला ने हिन्दुओं के साथ ये सब खुलेआम किया, जब तक वहाँ सेना न पहुँच गई।'

दीवान बहादुर सी गोपालन नायर को मोपला नरसंहार के मामले में 'प्राइमरी सोर्स' माना जा सकता है, क्योंकि वो अंग्रेजी काल में वहाँ के डिप्टी कलक्टर थे। उन्होंने भी लिखा है कि गर्भवती महिलाओं के शरीर को टुकड़ों में काट कर सड़क पर फेंक दिया गया था। मन्दिरों में गोमांस के टुकड़े फेंक दिए गए थे। कई अमीर हिन्दू भी भीख माँगने को मजबूर हो गए। जिन हिन्दू परिवारों ने अपनी बहन-बेटियों को पाल-पोष कर बड़ा किया था, उनके सामने ही उनका जबरन धर्मांतरण कर मुस्लिमों से निकाह करा दिया गया।

बाबासाहब अम्बेडकर ने इसे हिन्दू-मुस्लिम दंगा मानने से इनकार करते हुए कहा था कि हिन्दुओं की मौत का कोई आँकड़ा नहीं है, लेकिन ये संख्या बहुत बड़ी है। आप इतिहास में जहाँ भी मोपला के बारे में पढ़ेंगे, आपको बताया जाएगा कि ये एक 'कृषक विद्रोह था', अंग्रेजों के खिलाफ था। लेकिन, इसकी आड़ में ये छिपाया जाता है कि किस तरह हजारों हिन्दुओं को मौत के घाट उतार दिया गया था।

– चम्पारण

'भजनोपदेशक पं. ओमप्रकाश वर्मा के जीवन का कश्मीर में प्रचार विषयक एक प्रेरक एवं रोचक प्रसंग'

पं. ओमप्रकाश वर्मा आर्यसमाज की पिछली पीढ़ियों से परिचित एकमात्र ऐसे आर्योपदेशक थे जिन्हें आर्यसमाज के वरिष्ठ संन्यासियों, भजनोपदेशकों, आर्यविद्वानों के साथ कार्य करने का अनुभव प्राप्त था। उनके स्मृति-संग्रह में आर्यसमाज के गौरव को बढ़ाने वाली अनेक ऐतिहासिक घटनायें थी जिन्हें आर्यजन एवं इसके शीर्ष विद्वान् भी उनसे लेखबद्ध करने का आग्रह करते रहे थे। वर्मा जी ने अपने ऐसे अनेक संस्मरण पं. इन्द्रजित् देव जी को लिखवाये थे। यह सभी प्रसंग पाठकों के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक होने के साथ उनकी ज्ञानवृद्धि में भी सहायक हैं। वर्मा जी द्वारा श्री इन्द्रजित् देव जी को बोलकर लिखवाये गये सभी प्रेरक प्रसंगों की एक पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है। इस पुस्तक का शीर्षक है 'रोचक एवं प्रेरक संस्मरण वरिष्ठ भजनोपदेशक श्री ओम प्रकाश जी वर्मा'।

एक प्रसंग सन् १९५६ से सम्बन्धित इस प्रकार है कि वर्मा जी उस वर्ष आर्यसमाज हजूरी बाग, श्रीनगर जम्मू-कश्मीर में वेद प्रचार-सप्ताह के सिलसिले में गये थे। इस कार्यक्रम में उनके अतिरिक्त स्व. पं. शिव कुमार शास्त्री, पं. प्रकाशवीर शास्त्री, प्रिंसिपल पं. लक्ष्मीदत्त दीक्षित (स्वामी विद्यानन्द सरस्वती) तथा लाला रामगोपाल शालवाले भी पधारे थे।

एक दिन आर्यसमाज मन्दिर में वर्मा जी के कार्यक्रम के समय पर ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह भी श्रोताओं में विराजमान थे। वर्मा जी के भजन, गीत तथा विचार सुनकर वे बोले कि कल जन्माष्टमी का त्यौहार है तथा यहाँ के सैनिक मन्दिर में यह त्यौहार मनाया जायेगा। क्या कल वहाँ यही भजन, गीत व विचार उनके सैनिकों को भी सायं ७.०० बजे सुनायेंगे?

वर्मा जी ने उनके प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह जी अगले दिन आये तथा वर्मा जी को सेना के मन्दिर में अपनी गाड़ी में बिठाकर ले गये। यह मन्दिर डॉ. कर्णसिंह की कोठी के पास ही था। वर्मा जी ने वहाँ योगेश्वर कृष्ण जी के विषय में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के विचारों के आधार पर गीत, भजन व विचार प्रस्तुत किये। वर्मा जी के कार्यक्रम को सुनकर सैनिकों व उनके उच्चाधिकारियों में अद्भुत उत्साह का संचार हुआ। वापसी के लिये वर्मा जी जब ब्रिगेडियर साहब की गाड़ी के भीतर बैठे ही थे कि २ व्यक्ति सामने वाली सड़क से उनके पास आए तथा बोले 'क्या पं. ओम प्रकाश वर्मा आप ही हैं?' वर्मा जी ने उत्तर दिया कि हाँ, मैं ही ओमप्रकाश वर्मा हूँ। तब बख्शी गुलाम मुहम्मद वहाँ के मुख्यमंत्री थे। वर्मा जी थोड़े समय के लिये चिन्तित हुए व स्मरण करने लगे कि उन्होंने इस्लाम व मुसलमानों के विरोध में क्या कहा है? ऐसा उन्होंने कुछ भी नहीं कहा था। फिर तुरन्त उनके मन में विचार आया कि जब ब्रिगेडियर राजेन्द्र सिंह मेरे साथ हैं तो चिन्ता किस बात की करनी है?

वर्मा जी जीप से नीचे उतर गये तथा उन २ व्यक्तियों से उनका परिचय पूछा? उनमें से एक व्यक्ति ने उत्तर दिया कि वह यहाँ के राज्यपाल डॉ. कर्णसिंह के मामा ओकार सिंह हैं। वर्मा जी ने पूछा 'मेरे योग्य सेवा बताइए'।

उन्होंने कहा कि यहाँ आपने जो विचार सुनाए हैं, हमने सड़क पार उस कोठी में बैठकर पूरी तरह सुने हैं। क्या आप

यही विचार वहाँ आकर भी सुनाएंगे?

ठीक है, मैं कल सायं ७.०० बजे आर्यसमाज हजूरीबाग में मिलूँगा। आप मुझे कल वहाँ से लेकर आने की व्यवस्था कीजिये तो मैं आ जाऊँगा।

उन्होंने कहा कि वह कल उन्हें वहाँ से ले जाएँगे। आर्यसमाज मन्दिर लौटकर वर्मा जी ने पूरा वृतान्त आर्यसमाज के अपने साथी विद्वानों को सुनाया जो वहाँ उनके साथ पधारे हुए थे। वे सभी विद्वान् वर्मा जी के इन बातों को सुन कर बहुत प्रसन्न हुए। उन विद्वानों ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के तीन ग्रन्थ 'सत्यार्थप्रकाश', 'संस्कारविधि' तथा 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' डॉ. कर्णसिंह को भेंट करना तथा अपने उपदेश में महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज तथा आर्यसमाज का नाम अवश्य लेना।

डॉ. कर्ण सिंह की माताजी के नाम पर बने 'तारादेवी

निकेतन' में तब डॉ. कर्णसिंह जी सपरिवार रहते थे। उन दिनों वे जम्मू व कश्मीर के राज्यपाल थे। वह शासकीय बंगले में न रहकर 'तारादेवी निकेतन' में ही रहते थे।

इसके आगामी दिन वर्मा जी जब निश्चित कार्यक्रमानुसार वहाँ पहुँचे तो वहाँ एक श्वेत वस्त्रधारी महानुभाव को भी उन्होंने देखा। उसने वर्मा जी ने पूछा आपका परिचय? वर्मा जी ने कहा कि मैं आर्यसमाज का एक उपदेशक-प्रचारक ओमप्रकाश वर्मा हूँ। उन्होंने पूछा कि आजकल आर्यसमाज क्या कर रहा है? वर्मा जी ने बताया कि आजकल आर्यसमाज हिन्दी रक्षा आन्दोलन चलाने की तैयारी कर रहा है। वर्मा जी ने उनसे उनका परिचय भी पूछा। उन्होंने कहा कि लोग मुझे जनरल करिअप्पा कहते हैं। वर्मा जी प्रसन्न होकर बोले वाह! आप तो हमारे रक्षक सेनापति हैं। डॉ. कर्णसिंह ने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि आजकल आर्यसमाज की गतिविधियाँ तो हम पढ़ते रहते हैं परन्तु यह बताइए कि आर्यसमाज को स्थापित हुये लगभग अस्सी वर्ष बीत गये हैं, इन वर्षों में आर्यसमाज ने क्या किया है? वर्मा जी बोले 'आप जैसे राजाओं को ईसाई बनने से बचाया है।' यह शब्द वर्मा जी ने सहज व निडर होकर कहे। कर्णसिंह जी बोले क्यों गलत बोलते हो, हमें आर्यसमाज ने ईसाई होने से बचाया है? नहीं, हम यह कदापि नहीं मान सकते।

ओम प्रकाश वर्मा जी ने कहा कि आपको नहीं, आपके दादा महाराज प्रताप सिंह को ईसाई बनने से बचाया है। यदि वे तब ईसाई बन गये होते तो आज आप भी ईसाई होते। कर्ण सिंह जी ने पूछा कि आप कैसे कहते हैं कि मेरे दादा जी को ईसाई बनने से आर्यसमाज ने बचाया? वर्मा जी ने कहा सुनिए, डॉ. साहब! आपके दादा प्रताप सिंह के शासनकाल तक जम्मू-कश्मीर में पौराणिक पण्डितों के दबाव के कारण आर्यसमाज पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा हुआ था। आर्यसमाज इसे कैसे सहन कर सकता था। राजस्थान के पं. गणपति शर्मा लाहौर स्यालकोट के मार्ग से (सन् १८९२ में) जम्मू में पहुँच गये । श्रीनगर से २३ किमी. दूर स्थित नीचे एक हाऊस बोट में रहने लगे। उन्हीं दिनों पादरी जॉनसन श्रीनगर में पहुँचा व महाराजा प्रताप सिंह से कहने लगा कि अपने पण्डितों से मेरा शास्त्रार्थ कराओ। यदि मैं शास्त्रार्थ में पराजित हो गया तो आपका धर्म स्वीकार करूँगा तथा आपके पण्डित यदि हार गये तो आपको ईसाई बनना होगा।

निश्चित तिथि पर राज-दरबार में शास्त्रार्थ हुआ। विषय था 'मूर्तिपूजा'। भगवान की मूर्ति बन ही नहीं सकती क्योंकि उसकी कोई आकृति ही नहीं है। मूर्ति को भगवान् मानकर इसकी पूजा करनी चाहिये, इसे सिद्ध करें। कई दिनों तक पण्डित इसे सिद्ध न कर सके। महाराजा अपने पण्डितों का पक्ष कमजोर पड़ता देखकर बपतिस्मा पढ़कर ईसाई बनने को तैयार हो रहे थे कि तभी पं. गणपति शर्मा, जो बहुत देर से सभा में बैठे थे, खड़े हो गये व महाराज प्रतापसिंह को सम्बोधित करके बोले। महाराज! मुझे आज्ञा दें तो मैं जॉनसन से शास्त्रार्थ करूँगा।

महाराज की पराजय हो रही थी। उन्होंने आज्ञा दे दी परन्तु पराजित पण्डितों व पादरी जॉनसन ने यह कहकर पं. गणपति जी का विरोध किया कि यह तो आर्यसमाजी पण्डित है। महाराज ने यह सोचकर कि यह जॉनसन को तो ठीक कर ही देगा, पण्डितों व जॉनसन की आपत्तियाँ निरस्त कर दीं व गणपति शर्मा जी को जानसन से शास्त्रार्थ करने को कहा।

पं. गणपति जी बोले, पादरी जी। आप प्रश्न करें, मैं उत्तर दूँगा। जॉनसन बोले, हम आपसे शास्त्रार्थ करेंगे। पण्डित गणपति शर्मा ने उन्हें कहा कि पहले यह बताएँ कि शास्त्रार्थ शब्द का अर्थ क्या है? क्या

शास्त्र से मतलब आपका छः शास्त्रों, योग, सांख्य, न्याय, वैशेषिक, वेदान्त तथा मीमांसा से है? यदि इनसे ही आपका मतलब है तो बताइये कि इन दर्शन शास्त्रों में से किस का अर्थ करने आप यहाँ आए हैं? क्या आपको ज्ञान है कि अर्थ शब्द अनेकार्थक है। अर्थ का एक अर्थ धन होता है। दूसरा अर्थ प्रयोजन होता है जबकि तीसरा अर्थ द्रव्य, गुण व कर्म (वैशेषिक दर्शनानुसार) भी है। आप कौन-सा अर्थ समझने-समझाने आये हैं? शास्त्र भी केवल छः नहीं हैं। धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र व नीतिशास्त्र आदि कई शास्त्र विषयों की दृष्टि से भी हैं। आप 'शास्त्रार्थ' शब्द का अर्थ समझायेंगे तो हम आगे बात चलायेंगे।

जॉनसन ने गड़बड़ायी वाणी में उत्तर दिया कि हम इसका उत्तर न दे सकेंगे। इस पर प्रतापसिंह जी ने सिर हिलाकर कहा अब काहे को उत्तर आयेगा। तब पं. जी ने फिर कहा, महाराज! जॉनसन उत्तर नहीं दे रहा है।

इस पर प्रतापसिंह जी बोले, पण्डित जी! यह तो आपके पहले ही प्रश्न का उत्तर नहीं दे पा रहा है व मौन खड़ा है तो अब जाये यह अपने घर। पण्डित जी! आपने मेरी ही नहीं, पूरे जम्मू-कश्मीर की प्रतिष्ठा बचाई है। पूरे जम्मू-कश्मीर को ईसाई होने से बचाया है। हम आपसे बहुत प्रसन्न हैं। बताईये, आपको क्या भेंट दूँ?

महाराज! मुझे अपने लिये कुछ नहीं चाहिये। देना ही है तो दो काम कीजिये। प्रथम तो यह कि आर्यसमाज पर लगा प्रतिबन्ध हटा दें तथा दूसरा यह काम करें कि यहाँ आर्यसमाज की स्थापना हो जाये।

वर्मा जी ने यह घटना डॉ. कर्णसिंह को पूरी सुनाई और उन्हें यह भी बताया कि श्रीनगर में हजूरी बाग का आर्यसमाज मन्दिर आपके दादा प्रतापसिंह जी द्वारा दी गई भूमि पर ही स्थापित हुआ था। प्रतापसिंह जी ने आर्यसमाज पर अपने पिता रणवीर सिंह द्वारा पौराणिक पण्डितों के दबाव व धमकियों के कारण लगाए प्रतिबन्धों को तुरन्त हटा दिया था। श्री ओमप्रकाश वर्मा जी की बातें सुनकर डॉ. कर्णसिंह मौन हो गये। वर्मा जी ने उन्हें बताया कि यह घटना पं. इन्द्र विद्यावाचस्पति जी द्वारा लिखित 'आर्यसमाज का इतिहास प्रथम भाग' में पृष्ठ २५४ पर संक्षेप में वर्णित है। बाद में डॉ. कर्णसिंह के घर पर वर्मा जी के भजन, गीत व उपदेश हुये तथा उनकी गाड़ी उन्हें हजूरी बाग आर्यसमाज मन्दिर, श्रीनगर में वापिस छोड़ गई। वर्मा जी ने आर्यसमाज में उनके साथ पधारे पं. शिवकुमार शास्त्री आदि चारों उपदेशकों को उक्त पूरी घटना विस्तारपूर्वक सुनाई तो वे सभी बहुत प्रसन्न हुये और उन्होंने वर्मा जी को बहुत शाबाशी दी।

इन पंक्तियों के लेखक ने उपर्युक्त प्रसंग पं. इन्द्रजित् देव जी लिखित तथा आचार्य सोमदेव आर्य जी द्वारा सम्पादित पुस्तक 'रोचक एवं प्रेरक संस्मरण वरिष्ठ भजनोपदेशक श्री ओम प्रकाश जी वर्मा' से लिया है। हम पुस्तक के लेखक एवं सम्पादक जी का हृदय से धन्यवाद करते हैं। इस लेख में प्रस्तुत सामग्री को हमने कुछ परिवर्तित रूप में प्रस्तुत किया है। हम आशा करते हैं कि पाठकों को लेख की सामग्री एवं घटनायें पढ़कर प्रसन्नता होगी। यदि वर्मा जी पं. इन्द्रजित् देव जी को इस व अन्य संस्मरणों को न लिखवाते तो आर्य जनता इस महत्वपूर्ण इतिहास से अनभिज्ञ रह जाती। अतः वर्मा जी एवं श्री इन्द्रजित् देव जी का धन्यवाद है।

- मनमोहन कुमार आर्य
१९६ चुक्खूवाला-२, देहरादून (उत्तराखण्ड)

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

श्री रतिराम शर्मा, श्री रामेश्वर दयालु गुप्त; गाजियाबाद, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री सुरेश चन्द्र आर्य, श्री दीनदयाल गुप्त, स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री भवानी दास आर्य, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री नारायण लाल मित्तल, श्रीमती आभा आर्या, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, श्री सुधाकर पीयूष, आर्यसमाज गाँधीधाम, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, प्रो. आई. जे. भाटिया; नासिक, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती ओमप्रकाश वर्मा; जयपुर, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री दीपचन्द आर्य; बिजनौर, श्री खुशहालचन्द आर्य, गुप्तदान उदयपुर, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्री मोती लाल आर्य, श्री रघुनाथ मित्तल, श्री जयदेव आर्य, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, श्री नरेश कुमार राणा, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री वीरेन्द्र मित्तल, श्री विजय तायलिया, गुप्त दान दिल्ली, प्रो. आर.के.एरन, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टॉक, श्री विकास गुप्ता, श्री भारतभूषण गुप्ता, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री एम.पी. सिंह, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री विवेक बंसल, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, श्री लोकेश चन्द्र टांक, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरसेन मुखी, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई, श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, वडोदरा, प्रिन्सीपल डी. ए. वी. एच. जेड. एल. सी. सै. स्कूल, दरीबा (राजसमन्द), आचार्य आनन्द पुरुषार्थी, होशंगाबाद, श्री ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, नोएडा, श्री भरत ओ३म् प्रकाश अग्रवाल, अहमदाबाद, श्री सुरेन्द्र कर्मचन्दानी, पुणे, डॉ. आनन्द कुमार शर्मा, नई दिल्ली, श्री रमेश चन्द्र गुप्ता, यू.एस.ए., श्री शुद्धबोध शर्मा; श्रीगंगानगर, श्री कन्हैया लाल आर्य, शाहपुरा, डॉ. सत्या पी. वार्ष्णेय; कनाडा, श्री अशोक कुमार वार्ष्णेय; बडोदरा, श्री नागेन्द्र प्रसाद गुप्ता, बगहा (बिहार), श्री गणेशदत्त गोयल, बुलन्दशहर (उ. प्र.), श्री पूर्णचन्द आर्य, कानोड़, श्री वेदप्रकाश आर्य; नई दिल्ली, श्री सत्यनारायण शर्मा; उदयपुर, श्रीमती राधा देवी-रतन लाल राजोरा; निम्बाहेड़ा, श्री सत्यप्रकाश शर्मा; उदयपुर, सुदर्शन कपूर; पंचकूला, श्री देवराज सिंह; उदयपुर, श्रीमती ललिता मेहरा; उदयपुर, श्री कृष्ण लाल डंग आर्य; हिमाचल प्रदेश, श्री जी. राजेश्वर (गौड़) आर्य; हैदराबाद, पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर, श्री बलराम जी चौहान; उदयपुर, श्री राकेश जैन; उदयपुर

अफगानिस्तान में जब से तालिबान बन्दूक के बल पर कब्जे की ओर बढ़ा है तभी से भारत के चरमपंथियों की तालिबानी मानसिकता को भी खाद-पानी मिलने लगा है। एक ओर जहाँ आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड सरेआम तालिबान की तारीफ में कसीदे पढ़ रहा है वहीं समाजवादी पार्टी के सांसद जिन्हें लॉ मेकर कहा जाता है, लॉ ब्रेकर का काम सरेआम कर रहे हैं। यह 'माननीय' वही हैं जिन्होंने भरी संसद में वन्देमातरम का अपमान करते हुए विरोध किया था। वे अपनी तालिबानी और इस्लामिक जिहादी सोच के बारे में बहुचर्चित हैं। उन्होंने कोरोना काल में भी किस तरह के वक्तव्य दिए थे, सभी जानते हैं। तालिबान के बढ़ते आतंकी प्रभाव से मुग्ध इन महाशय ने तो

तालिबानी सोच पर लगे पूर्ण विराम

हमारे स्वतंत्रता आन्दोलन को ही कलंकित करने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। जिन स्वतंत्रता सेनानियों पर सम्पूर्ण भारत को गर्व है उसकी तुलना तालिबानियों से करके उन्होंने सम्पूर्ण राष्ट्र को ही शर्मसार कर दिया। इतना ही नहीं, जिनको मशहूर शायर कहा जाता है वह भी तालिबानियों के तलवे चाटने लगे। धीरे-धीरे करके भारत में भी तालिबानी मानसिकता न सिर्फ पनप रही है अपितु, उसके महिमामंडन करने वाले लोग सरेआम आगे आ रहे हैं।

शायद इसी का परिणाम है कि मोहर्रम के जुलूस में बिहार के कटिहार में मरीजों पर हमला हो या उज्जैन सहित भारत के कई स्थानों पर हिन्दुस्तान मुर्दाबाद और पाकिस्तान जिंदाबाद के नारे या फिर इंदौर के बाम्बे बाजार में दलित बेटी को बचाने गई पुलिस पर जिहादियों का सामूहिक आक्रमण, सभी में मानसिकता एक ही स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया है कि हम खाएँगे भारत का और गाएँगे पाकिस्तान का। कहलायेंगे हिन्दी और काम करेंगे पाकिस्तानी। जिस थाली में खाते हैं उसी थाली में छेद करने की इनकी पुरानी सोच बार-बार उजागर होती है। तालिबानी मानसिकता के जनक के रूप में दारुल उलूम देवबंद को कौन नहीं जानता। दारुल उलूम के असंख्य मदरसे पाकिस्तान, बांग्लादेश और अफगानिस्तान में मानवता के विरुद्ध मुसलमानों को इस्लामिक कट्टरपन्थी व जिहादी शिक्षा के विशेष केन्द्र बन चुके हैं।

अभी हाल ही में आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड ने युवक-युवतियों के आपसी सम्बन्धों और अन्तर्धार्मिक निकाहों पर प्रतिबन्ध स्वरूप एक गाइडलाइन जारी की है। इसमें उसने मस्जिदों, इमामों, दीनी शिक्षा देने वालों, उलेमा-इकरान तथा मुस्लिम लड़कियों के अभिभावकों को विशेष हिदायत देते हुए कहा कि लड़कियों को लड़कों के साथ न पढ़ाएँ, लड़कियों की शिक्षा अलग करें, लड़कियों के मोबाइल पर नजर रखें। उन्हें कुरान और हदीस की शिक्षा के साथ बताएँ कि गैर मुस्लिम के साथ कोई सम्बन्ध न बनाएँ, स्कूल में लड़कियों को पढ़ाने का प्रयास न करें और यह देखें कि लड़कियाँ मोबाइल फोन पर क्या करती हैं। वे कहीं स्कूल के बाहर तो समय व्यतीत नहीं करतीं, गैर मुसलमानों के साथ तो नहीं रहतीं। इसमें यह बात भी स्पष्ट तौर पर कही गई कि नस्ल की सुरक्षा के लिए और अपनी कौम को बर्बादी से बचाना है तो अन्तर धार्मिक विवाह को रोकें। इस्लाम की

सही तालीम माँ-बाप बच्चों को नहीं दे रहे हैं। इसलिए, इमामों, धर्मगुरुओं और उलेमाओं के द्वारा मुस्लिम बच्चों को समझाया-बुझाया जाए।

महत्वपूर्ण बात यह है कि एक तरफ गंगा-जमुनी सभ्यता की बात करते हैं, भाई-चारे का ढोंग करते हैं, संविधान की दुहाई देते हैं, सौहार्द की बात करते हैं और अगर मुस्लिम लड़का किसी गैर मुस्लिम से सम्बन्ध बनाता है, निकाह करता है, उसका धर्मांतरण करता है तो उसे पुरस्कार दिया जाता है जबकि दूसरी ओर, अगर कोई मुस्लिम लड़की किसी गैर मुस्लिम से गलती से भी प्यार कर बैठे तो इनका अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। अधिकांश ऐसे हिन्दू लड़के, उनके परिजन तथा कई बार तो लड़की की भी जान ले ली गई। लव जिहाद, धर्मांतरण और नारी उत्पीड़न के लिए कुख्यात इस्लामिक जिहादी लगातार गैर मुसलमानों और उनकी बेटियों पर कुदृष्टि लगाए रखते हैं। उत्तर प्रदेश में लव जिहाद व धर्मान्तरण विरोधी कानून जब से बना है उसको अभी १ वर्ष भी पूरा नहीं हुआ लेकिन उस कानून के अंतर्गत १०० से अधिक मुकदमे दर्ज हो चुके हैं। दर्जनों चार्ज शीट हो कर सलाखों के पीछे हैं। अन्य राज्यों में भी जहाँ कानून बने, उसका प्रतिसाद जनता ने देखा। लेकिन दुर्भाग्य से अभी भी अनेक राज्य, बल्कि मैं कहूँगा कि अधिकांश राज्य ऐसे हैं जहाँ पर इस तरह के कानून के अभाव में जिहादी खुलेआम नारियों का चीरहरण, उनका धर्मांतरण, बलात्कार, हत्या व आतंकवाद में संलिप्त हैं।

आवश्यकता इस बात की है कि आल इंडिया मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड, दारुल उलूम देवबन्द तथा कट्टरपन्थी सोच के जिहादियों व देश विरोधियों पर अंकुश लगे। भारत में रहकर पाकिस्तान जिन्दाबाद, तालिबान जिन्दाबाद, नारा-ए-तकबीर अल्ला-हू-अकबर जैसे नारों पर विराम लगे और कट्टरपन्थियों, जिहादियों व देशद्रोहियों के विरुद्ध कठोरतम कार्यवाही हो। धारा ३७० हटने के बाद कश्मीर घाटी में अभी भी कुछ लोग तालिबानी और जिहादी मानसिकता के महबूब और महबूबा बने हुए हैं। उन पर भी समय पर शिकंजा जरूरी है। बार-बार वे कहते थे तिरंगे को उठाने वाले नहीं मिलेंगे, वे अब भी धमकी देने का दुस्साहस कर रहे हैं कि हमारे सब्र का बाँध टूट जाएगा। ऐसी मानसिकता पर अब भारत में पूर्ण विराम का समय आ चुका है।

- विनोद बंसल,
(लेखक विश्व हिन्दू परिषद के राष्ट्रीय प्रवक्ता हैं)

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार ₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।
- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें "सत्यार्थ सौरभ" के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण इसी पृष्ठ पर देखें।

ज्ञान-विज्ञान का आदि स्रोत भारत

{व्यक्ति जब अपनी विवशताओं से उत्पन्न बाह्य दबाव को हटाने में सफल हो जाता है तो वह असत्य को छोड़ करके सत्य को ग्रहण करने की ओर अग्रसर हो सकता है, ठीक उसी प्रकार से वैचारिक परिपक्वता के कारण भी धीरे धीरे वह सत्य की ओर अग्रसर होता रहता है। मैक्समूलर के जीवन में हमें यह तथ्य दिखाई देता है। 1868 के मैक्समूलर में और 1883 के मैक्समूलर में यही अन्तर दृष्टिगोचर होता है। जिस मैक्समूलर ने कभी अंग्रेजों की निश्चित योजना के अनुसार उसके दवाब में अथवा अपने अज्ञान में, भारतीय संस्कृति को कभी महत्व नहीं दिया, वेदों के अवमूल्यन और तिरस्कार में आगे–आगे रहा, वही मैक्समूलर जीवन की सांध्य बेला में परिवर्तित होता दिखाई देता है। 'हम भारत से क्या सीखें' इस पुस्तक का प्रकाशन 1883 में होता है, जिसमें वह वेदों की शिक्षाओं के बारे में, और 'पूर्व' के ज्ञान के बारे में जिन शब्दों में अपने भाषण देता है, वह पढ़े जाने योग्य हैं और वही वस्तुतः भारतीयता के प्रति सही दृष्टिकोण है। मैक्समूलर महर्षि दयानन्द के ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के अंकों का ग्राहक था। हमारी निश्चित मान्यता है कि महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य की पद्धति को जानने के पश्चात् उसके मत में परिवर्तन हुआ। मैक्समूलर के व्यक्तित्व और कृतित्व के बारे में विस्तार से न जाकर हम इस आलेख को उक्त पुस्तक से उद्धृत कर रहे हैं ताकि वे लोग जो पाश्चात्य विद्वानों के कथन को अत्यधिक महत्व देते हैं वह समझ सकें कि उनके समक्ष भी भारत के ज्ञान और संस्कृति का कितना महत्व था, भले ही उन्होंने इसका वर्णन कभी किया हो या नहीं किया। 'हम भारत से क्या सीखें' पुस्तक से यह अवतरण पाठकों के ज्ञानार्थ प्रस्तुत है।} –सम्पादक

यदि हमें इस समस्त जगतीतल में किसी ऐसे देश की खोज करनी हो जहाँ प्रकृति ने धन शक्ति और सौन्दर्य का दान मुक्तहस्ती होकर किया हो या दूसरे शब्दों में जिसे प्रकृति ने बनाया ही इसलिए हो कि उसे देखकर स्वर्ग की कल्पना साकार की जा सके तो मैं बिना किसी संशय या हिचकिचाहट के भारत का नाम लूँगा। यदि मुझसे पूछा जाए कि किस देश के मानव मस्तिष्क ने अपने कुछ सर्वोत्तम गुणों को सर्वाधिक विकसित स्वरूप प्रदान करने में सफलता प्राप्त की है, जहाँ के विचारकों ने जीवन के सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्नों एवं समस्याओं का सर्वाधिक सुन्दर समाधान खोज निकाला है, तथा इसी कारण वह इस योग्य हो गया है कि कांट और प्लेटो के अध्ययन में पूर्णता को पहुँचे हुए व्यक्ति को भी आकर्षित करने की शक्ति रखता है, तो मैं बिना किसी विशेष सोच-विचार के भारत की ओर अंगुली उठा दूँगा। यदि मैं स्वयं अपने से ही यह पूछना आवश्यक समझूँ कि जिन लोगों का समूचा पालन पोषण (शारीरिक एवं मानसिक) यूनानियों एवं रोमनों की विचारधारा के अनुसार हुआ तथा अभी हो रहा है तथा जिन्होंने सेमेटिक जातीय यहूदियों से भी बहुत कुछ सीखा है ऐसे यूरोपीय जनों को यदि आन्तरिक जीवन को सच्चे रूप में मानव जीवन बनाने वाली तथा ब्रह्माण्ड बन्धुत्व (ध्यान रखिए कि मैं केवल विश्वबन्धुत्व की बात नहीं कर रहा हूँ) की भावना को साकार बना सकने में समर्थ सामग्री की खोज करनी हो तो किस देश के साहित्य का सहारा लेना चाहिए तो एक बार फिर मैं भारत की ही ओर इंगित करूँगा जिसने न केवल इस जीवन को ही सच्चा मानवीय जीवन बनाने का सूत्र खोज निकाला है वरन् परवर्ती

जीवन किं बहुना शाश्वत जीवन को ही सुखमय बनाने के सूत्र पा लेने में सफल हुआ है।

मैं समझ रहा हूँ कि आप मेरी इस उक्ति को सुनकर आश्चर्य कर रहे हैं। मैं यह भी जानता हूँ कि हमारे जिन लोगों ने भारत में एक लम्बा समय बिताया है, कोलकाता, मुम्बई, मद्रास शहरों में निवास किया है, जो वहाँ के लोगों से सम्पर्क स्थापित करके भारतीय जीवन का जानकार होने का दावा भी करते हैं, जिन्होंने अपने को भारत के ग्रामीण जीवन एवं ग्रामीण व्यवस्था का पूर्ण जानकार समझ लिया है तथा जिन्होंने यह कहकर तथा भारतीय के प्रति छी-छी का भाव दर्शा कर आत्म संतोष प्राप्त कर लिया है कि भारत में अब कुछ भी देखने-सुनने-जानने योग्य बाकी नहीं रह गया है, वे मेरी यह बात सुनकर आश्चर्य से विजडिट हुए बिना न रह सकेंगे कि जिनको वे लोग नेटिव कहकर अपनी घृणा प्रदर्शित करते रहे हैं उनमें भी इतनी शक्ति है कि वह यूरोपियनों के गुरु हो सकते हैं। उनको आश्चर्य से अभिभूत हो जाना पड़ेगा जब वे यह सुनेंगे कि जिन देहाती भारतीयों को वे बाजारों तथा न्यायालयों में नित्यप्रति देखा करते थे उनके भी जीवन से हमारे यूरोपीय बन्धु बहुत कुछ सीख सकते हैं।

अच्छा यही होगा कि जिन अंग्रेज बन्धुओं ने अपना कुछ समय भारत में नागरिक प्रशासन के अधिकारी के रूप में या अन्य प्रकार की सेवाओं के कर्मचारी के रूप में, धर्म प्रचारकों के रूप में, व्यापारियों के रूप में बिताया है और जिन भाइयों को भारत के विषय में ऐसे लोगों से अधिक जानकारी होनी चाहिए जिन्होंने आर्यावर्त्त की भूमि को स्पर्श भी नहीं किया है, ऐसे लोगों को मैं पहले ही बता देना चाहता हूँ कि जिस भारत से उनका परिचय है मैं उस से सर्वथा भिन्न भारत की चर्चा कर रहा हूँ। मैं भारत की उस स्थिति की चर्चा कर रहा हूँ जैसा वह आज से २००० वर्ष पूर्व या यूँ कहें कि ३००० वर्ष पूर्व था। हमारे अधिकांश बन्धु भारत की वर्तमान स्थिति से परिचित हैं जो कोलकाता, मुम्बई, मद्रास में रहता है अर्थात् वे भारत की उसी जनसंख्या से परिचित हैं जो शहरों में रहती है और जिन्होंने जीवन के अधिकांश विषयों में अंग्रेजों का अन्धानुकरण कर लिया है, मैं जिस भारत की बात कर रहा हूँ वह देहातों में रहता है और वही वास्तविक भारत है। नगरों के भारत में भारतीयता समाप्त हो गई है उसमें न जाने कितना सम्मिश्रण हो गया है न जाने कितने अनुकरणों के कारण उसमें विकृति आ गई है। परन्तु देहातों में निरक्षर जनता में तथा उस जनता में जो विदेशी सम्पर्कों से सर्वथा अलग पड़ी हुई है भारतीयता अब भी अपने सर्वोच्च शुद्ध रूप में जीवित है। भारत गाँवों का देश है वह

गाँव में ही रहता है ना कि शहरों में।

जो कुछ मैं आप लोगों को विशेषतया भारतीय नागरिक प्रशासन के छात्रों को बताना चाहता हूँ वह यह है कि चाहे १००० या २००० या ३००० वर्ष भी प्राचीनकालीन भारत की बात करें या आज के ही भारत की बात करें, उस देश की भूमि, वहाँ के लोग या यूँ कहें कि वह समूचा देश ही ऐसी समस्याओं से भरा पूरा है जिसके समाधान से हमारा भी स्वार्थ सिद्ध हो सकता है। उनके समाधान पा लेने से हमारे आज के अर्थात् १९वीं शताब्दी के उन्नतिशील यूरोप का भी भला हो सकता है। परन्तु कठिनाई है इन समस्याओं को जानने की, उन्हें खोज निकालने की। समाधान निकालने के लिए समस्याओं का ज्ञान होना चाहिए और समस्याओं का ज्ञान प्राप्त करने के लिए आवश्यक है कि हम जानें कि किस प्रकार और कहाँ उन समस्याओं का ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।

यदि इस देश इंग्लैंड में रहते हुए किसी विशेष दिशा में आपका रुझान हो गया है तो उस रुझान को पूर्ण करने के लिए संतोषजनक सामग्री आपको भारत में मिल सकती है और आजकल की उन सर्व प्रमुख समस्याओं का समाधान प्राप्त करने में जो लोग अपना समय लगाना चाहते हैं जो आजकल के प्रमुख विद्वानों एवं विचारकों को उलझाए आए हुए हैं, ऐसे लोगों को भी भारत में कार्य करने का पर्याप्त क्षेत्र और अवसर मिलेगा। उनको यह भी सोच कर भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है कि भारत में जाकर उनकी दशा देशनिकाला व्यक्ति की सी हो जाएगी। ऐसे लोगों को यह सोचने की आवश्यकता नहीं प्रतीत होगी कि वह एक ऐसे देश में जा पड़े हैं जहाँ उनकी रुझान तथा उनका ज्ञान व्यर्थ हो गए हैं।

यदि आपकी रुचि भूगर्भ शास्त्र में है तो हिमालय से लेकर लंका तक के विस्तृत भू-भाग में अध्ययन व खोज करने की सामग्री आपको आवश्यकता से अधिक मिलेगी। यदि आपकी रूचि वनस्पति विज्ञान में है तो असंख्य हुकर्स (इंग्लैंड का प्रमुख वनस्पति विशेषज्ञ) की जिज्ञासा शान्त कर देने योग्य

सामग्री भारत में प्राप्त है।

यदि आप प्राणिविज्ञान के क्षेत्र में कुछ कर जाना चाहते हैं तो जरा महाशय हैकेल (प्रसिद्ध जर्मन जीवविज्ञानी) का विचार कीजिए जो इस समय भी भारत के जंगलों में तथा भारतीय समुद्र तटों पर खोज करते फिर रहे हैं और जिनके लिए

भारत का प्रवास मानो उनके जीवन के स्वर्णिम स्वप्न का प्रत्यक्षीकरण ही है। जैसे उनके जीवन के सभी स्वप्न भारत में जाकर साकार हो उठे हैं। भारत को अपना अध्ययन क्षेत्र बनाकर मानो उन्होंने अपने जीवन का उद्देश्य पा लिया है। इसी प्रकार मानव जाति शास्त्र में रुचि रखने वालों के लिए तो भारत जैसे तत्सम्बन्धी सामग्रियों का अजायब घर ही है।

यदि कोई व्यक्ति भवन निर्माण कला में अनुराग रखता है, यदि आप में से किसी ने रद्दी के कूड़े में से वस्तु निर्माण कला पर प्रकाश डाल सकने में सक्षम किसी छुरी या अन्य सामग्री पा जाने के हर्ष का अनुभव किया है तो आप जनरल कनिंघम का भारतीय वास्तुकला का सर्वेक्षण की वार्षिक रिपोर्ट पढ़ कर देखिए और मुझे विश्वास है कि आप आज ही फावड़ा लेकर इस बात के लिए प्रस्तुत हो जाएँगे कि बौद्ध सम्राटों द्वारा बनवाए गए विहारों एवं विद्यालयों का उत्खनन करके उनकी वास्तु कला पर प्रकाश डालें।

यदि आपने केवल मनोरंजन के लिए भी सिक्कों को इकट्ठा किया है तो आप पाएँगे कि भारत में जितने प्रकार के प्राचीन सिक्के प्राप्त हैं उतने अन्य किसी भी देश में नहीं। वहाँ पर आपको पर्शियन, कैटियन, रशियन, यूनानी, मेसीडोनियन, सिथियन, रोमन, मुसलमानी यह सभी प्रकार के सिक्के बहुतायत से मिलेंगे। हाँ आवश्यकता होगी केवल उनको खोजने वाली दृष्टि की। जिस समय वारेन हेस्टिंग्स भारत का गवर्नर जनरल था तो उसे बनारस जिले में किसी नदी के किनारे एक मिट्टी का पात्र मिला था जिसमें सोने के १७२ डेरिक्स थे। इन सिक्कों को वारेन हेस्टिंग्स ने इतना महत्वपूर्ण माना कि उन्हें उपहार स्वरूप ईस्ट इंडिया कम्पनी के बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के पास भेजा था और इसके लिए उसने अपने को दानवीर सा समझा। दुख है कि कर्मचारियों ने उन सिक्कों को गला डाला। संक्षेप में उन सिक्कों का भाग्य कि जब वारेन हेस्टिंग्स लौटकर इंग्लैंड आया तो वह सिक्के गायब हो चुके थे। अब आप लोगों का कार्य है कि इस प्रकार की कार्यवाहियों को रोकें।

भारत की प्राचीन वैदिक गाथाओं ने भारत की पौराणिक कथाओं पर जो प्रकाश डाला है उसके कारण भारत की पौराणिक कथाओं ने एक सर्वथा नवीन रूप धारण कर लिया है। वर्तमान काल में पौराणिक कथाओं के वैज्ञानिक अध्ययन की नींव यद्यपि पड़ चुकी है फिर भी उसमें अभी बहुत कुछ जोड़ना शेष है और जोड़ने का यह कार्य जितनी अच्छी तरह भारत में किया जा सकता है उतनी अच्छी तरह अन्य किसी देश में नहीं हो सकता।

यदि हम अपने देश में प्रचलित बाल कथाओं के मूल स्थान की खोज करने का प्रयत्न करें तो हमें पता चलेगा कि हमारे देश के बच्चे जिन कथाओं के माध्यम से शताब्दियों से मनोरंजन एवं प्रारम्भिक नीतिज्ञान प्राप्त करते चले आ रहे हैं वह कहानियाँ सर्वप्रथम भारत से ही केवल हमारे देश में नहीं वरन् संसार के सभी देशों में गई हैं। अधिकांश इतिहास शोधकों का मत है कि इन कहानियों ने पूर्व से ही पश्चिम की ओर यात्रा की है। आज के दिन जिन बाल कथाओं का हमारे घर-घर में प्रचलन हैं, उन सबका आदिस्रोत सर्वमान्य रूप से बौद्ध कथाएँ ही हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इस क्षेत्र में जितना शोध हो चुका है उससे कई गुना अधिक शोध करने की आवश्यकता है। अब भी इस सम्बन्ध की न जाने कितनी समस्याएँ अपना समाधान प्राप्त करने की प्रतीक्षा कर रही हैं। प्लेटो ने अपने क्रेटिलस में एक कथा दी

है, जिसमें एक गधा शेर की खाल ओढ़कर सभी को डराता फिरता है क्या हम यह मान लें कि यह कथा भी पूर्व से ही उधार ली गई है, आप प्रेम की देवी का वह कथानक पढ़ें जिसमें उन्होंने एक चुहिया को सर्वांग सुन्दरी युवती बना दिया था और सर्वाधिक शक्तिशाली पति पाने की कामना से अभिभूत उसने एक मूषक को ही सर्वाधिक सशक्त पाकर

उसी से ब्याह करने की इच्छा प्रकट की और विवश होकर देवी को उसे फिर चुहिया बनाना पड़ा। क्या यह कथा संस्कृत की ही नहीं है? अवश्य है। परन्तु आश्चर्य का विषय तो यह है कि ईसा से ४०० वर्ष पूर्व ग्रीक भाषा में लिखित स्ट्रेटिस के एक सुखान्त नाटक में इस कथा का समावेश कैसे सम्भव हो सका? इस प्रकार की उलझन को सुलझाने के लिए अभी बहुत सा कार्य करने को पड़ा है।

इतिहास के सूत्र को पकड़कर यदि हम थोड़ा और प्राचीन काल में प्रवेश करें तो हमें विचित्र समकालीनताओं के दर्शन होते हैं। भारत की प्राचीन गाथाओं में तथा पश्चिम कथाओं में इतना साम्य मिलता है कि यह निर्णय करना कठिन हो जाता है। इन कहानियों ने पूर्व से पश्चिम की यात्रा की अथवा पश्चिम से पूर्व की?

किंग सोलोमन के समय में भारत, सीरिया और फिलीस्तीन के बीच व्यापारिक आवागमन सुविधापूर्ण रूप से खुला हुआ था, यह बात इस प्रकार प्रमाणित होती है और इस तथ्य को विद्वानों द्वारा मान्यता मिल चुकी है कि बाइबिल में ओकीर देश से आने वाले कुछ सामानों के नाम संस्कृत भाषा के शब्दों में लिखे गए हैं इन सामानों में हाथी दांत, बन्दर, मयूर तथा चन्दन हैं जिन्हें भारत के अतिरिक्त अन्य किसी देश से आया हुआ माना ही नहीं जा सकता है। इस बात को मानने का कोई स्पष्ट कारण नहीं दिखाई पड़ता कि भारत फारस की खाड़ी, लाल सागर तथा भूमध्य सागर के रास्ते होने वाला अन्तर्देशीय व्यापार कभी एकदम से बन्द हो गया हो। जिस समय बुक आफ किंग्स नामक ग्रन्थ लिखा जाता रहा होगा उस समय भी इस व्यापारिक आदान-प्रदान के पूर्णतया बन्द होने का कोई संकेत नहीं मिलता।

आप लोग शाह सालोमन के विवेक पूर्ण न्याय की बात सुन चुके हैं। आपको याद भी होगा यहूदियों ने सालोमन के न्यायिक निर्णयों को अति विवेकपूर्ण कहकर उन्हें वैधानिकता के प्रमाण रूप में ग्रहण किया है, मैं यह स्वीकार करता हूँ कि मैं न तो विधिज्ञ ही हूँ और ना मेरा मस्तिष्क ही वैधानिकता पूर्ण है। जब-जब मैं सालोमन के उस निर्णय की बात पढ़ता हूँ तो कांपे बगैर नहीं रह पाता, जिसमें सालोमन ने एक बच्चे को दो टुकड़ों में काटकर वादिनी एवं प्रतिवादिनी माताओं के बीच बांट देने की व्यवस्था दी थी।

आइए हम आपको इसी प्रकार की एक अन्य कथा सुनाएँ जिसे बौद्ध धर्म अनुयाई जन प्रायः आपस में कहा सुना करते हैं, जिनकी साहित्य निधि में इस प्रकार की अनेक कथाएँ व कहावतें भरी पड़ी हैं। बौद्धों के त्रिपिटकों का अनुवाद तिब्बती भाषा में कंजूर के नाम से हुआ है जिसमें दो ऐसी स्त्रियों की कथा दी हुई है जो एक ही बालक को अपना अपना कहती थीं। न्यायकर्त्ता राजा ने दोनों स्त्रियों की बातों को देर तक ध्यान से सुना और पर्याप्त देर तक विचार करने के पश्चात् भी वे इसका निर्णय न कर सके कि वास्तव में बच्चा किस स्त्री का था। उनकी निराशाजनक मुद्रा देखकर विशाख आगे आया और उसने राजा से कहा कि आप इस निर्णय के लिए क्यों चिन्तित होते हैं आप इन स्त्रियों से कह दें कि वे स्वयं ही इस प्रश्न का निर्णय कर लें। राजा ने तत्क्षण वैसी ही आज्ञा दे दी। बस आज्ञा पाने की देर थी दोनों स्त्रियों ने भयानक रूप से लड़ना और छीना झपटी करना शुरू कर दिया, जिससे घबराकर बच्चा उच्च स्वर में रोने लगा। वास्तविक माँ से बच्चे का यह क्रन्दन न देखा गया और उसने छीना झपटी से हाथ खींच लिया और इसी हाथ खींचने के कारण ही वाद का निर्णय हो गया। बच्चा हाथ खींच लेने

वाली स्त्री को दे दिया गया और दूसरी स्त्री को कोड़े मारकर निकाल दिया गया।

मेरा स्वयं अपना विचार है कि कहानी का भारतीय रूप ही अधिक स्वाभाविक है जिसमें मानव वृत्ति के पूर्ण ज्ञान का उपयोग किया गया है और इस कथा में सालोमन द्वारा किए निर्णय की कथा से अधिक बुद्धिमत्ता है।

आप में से बहुतों ने भाषाएँ पढ़ी हैं, इतना ही नहीं भाषा विज्ञान भी आपने पढ़ा है। क्या इस संसार में अन्य कोई ऐसा देश है जिसमें भाषा विज्ञान के सर्वाधिक महत्वपूर्ण समस्याओं का अध्ययन करने की इतनी सामग्री मिलती है जितनी भारत में? यदि केवल लोक भाषाओं के विकास एवं उनकी क्षमता को ही लिया जाए या भाषाओं के सम्भावित मिश्रण पर ही विचार किया जाए, (स्मरण रहे कि मैं केवल शब्दों के मिश्रण की बात नहीं कर रहा हूँ वरन् उस मिश्रण की बात कर रहा हूँ जिसमें व्याकरण के नियम भी सम्मिलित हो जाते हैं) तो क्या कोई भाषा आर्य भाषा, द्रविड़ भाषा या मुंडा लोगों की भाषा का मुकाबला कर सकती है? इन भाषाओं की इस प्रकार की प्रवृत्ति का पता तब चलता है जब इनके बोलने

वालों का सम्पर्क विभिन्न आक्रामक जातियों से होता है। आप जानते हैं कि भारत ने अनेकानेक आक्रामकों को देखा है। इस देश के वासियों ने गरीबों को देखा, ऊँची जाति का आक्रमण देखा, अरबों का वार भी इन्होंने सहा, फारसी आक्रामक उन्होंने भी इन पर अपना बल आजमाया, मुसलमानों और सबसे अन्त में अंग्रेजों ने भारत को विजित किया, इन सभी जातियों की भाषाओं से भारत की लोक भाषाओं का सम्पर्क हुआ परन्तु उनकी सम्मिश्रण प्रवृत्ति अक्षुण्ण ही रही।

यदि आपका अनुराग न्याय शास्त्र में है तो फारस में कानून का इतिहास खोजा जा सकता है और मजे की बात यह है कि भारत के कानून का यह इतिहास यूनान के कानून के इतिहास से सर्वथा भिन्न होगा। यदि इसकी तुलना रोम के इतिहास तथा जर्मनी के कानून के इतिहास से की जाए तो भी यह भिन्नता जाएगी नहीं। इस प्रकार की विभिन्नता के बावजूद भी इनमें कुछ समानताएँ भी होंगी। न्याय शास्त्र के तुलनात्मक अध्ययन के अनुरागियों के लिए यह विभिन्नता अभिरुचि पूर्ण होंगी तथा यह समानताएँ भी।

आजकल प्रतिवर्ष नई सामग्रियाँ प्रकाश में आती जा रही हैं। उदाहरण के लिए हम धर्म या समयाचरिक सूत्रों का नाम ले सकते हैं जिनके आधार पर छन्दोबद्ध विधिग्रन्थ प्रस्तुत किए गए हैं। इस प्रकार की विधि पुस्तकों में मनु की विधियों को उदाहरणस्वरुप रखा जा सकता है। एक बार जिसे इतिहासकार लोग मनु द्वारा प्रतिपादित विधियों की संहिता कहते थे और जिनका समय यदि ईसा पूर्व १२वीं नहीं तो पाँचवी शताब्दी अवश्य आता जाता था आज उसी को लोग ईसा की चौथी शताब्दी का ग्रन्थ मानने लगे हैं। आजकल के लोग उसको ना तो संहिता ही मानते हैं ना विधि संहिता ही, यहाँ तक कि अब लोग उसको मनु के विधियों की संहिता कहने से भी बचने लगे।

यदि आपने विधि निर्माण की पूर्व स्थितियों में किए हुए अनुसंधान में अपनी रुचि लगाई है तथा उन कार्यों के प्रति आपके हृदय में प्रशंसा के भाव विद्यमान हैं, यदि उन पूर्व स्थितियों के अति सामान्य रूपों अर्थात् अति सामान्य राजनीतिक गणों के प्रारम्भ एवं उनके विकास पर विचार किया है जिसकी पूरी सुविधा आपको इस कैंब्रिज विद्यालय में प्राप्त है या विचार करना पसन्द करते हैं तो उन्हें आज भी भारत की ग्रामीण रियासतों, ग्राम पंचायतों में आप देख सकते हैं। और मुझे विश्वास है कि इस दिशा में आप चाहे जितना भी श्रम व कष्ट उठायें वह अपुरस्कृत नहीं रहेगा।

अन्त में हम उस विषय को लेते हैं जिसका महत्व हम मानें या ना मानें हमारे जीवन में सबसे अधिक है। इस जीवन में सबसे अधिक ख्याल हम जिसका रखते हैं, जिसको इंकार करने वाले लोग स्वयं उसे स्वीकार करने वालों से अधिक महत्व प्रदान करते हैं तथा जो हमारे जीवन के सारे कामों की प्रेरणा देता है उसे व्यवस्थित एवं नियंत्रित करता रहता है जिसके बिना न तो कोई गण ही स्थापित हो सकता है और न वृहद् साम्राज्य, जिसके बिना न परम्पराएँ बन सकती हैं और ना विधि निर्माण ही सम्भव है, न तो हमें सत्य का विवेक हो सकता है और ना सच की पहचान ही हो सकती है, जो भाषा के बाद सर्वाधिक व्यवस्थित रूप में है जो मानव एवं पशु के बीच एक अभेद्य दीवार के रूप में खड़ा है, जो हमारे वैयक्तिक जीवन को सम्भव तथा सही बनाता है, जो इस जीवन का अप्रत्यक्ष रूप से सर्वाधिक गम्भीर स्रोत है तथा जो हर प्रकार के राष्ट्रीय जीवन की सुदृढ़ आधार भित्ति है, जो इतिहासों में सर्वप्रमुख इतिहास होते हुए भी रहस्यों में सर्वाधिक रहस्यपूर्ण है, हम यदि उस धर्म पर ही विचार करना चाहें तो भारत के अतिरिक्त इसके उद्भव, स्वाभाविक विकास एवं क्षय के अध्ययन का क्षेत्र और कौन सा देश हो सकता है? भारत ब्राह्मणवादियों का देश है, बौद्ध धर्म की जन्मभूमि है तथा पारसियों का शरण स्थल है। आज भी जहाँ नवीन विश्वासों का जन्म होता रहता है भविष्य में भी यह अवनति प्राप्त देश संसार का उज्ज्वलतम देश हो सकता है यदि १६ शतियों की गर्द उसके शरीर पर से झाड़ी जा सके।

साभार- What India can teach us
अनुवाद- कमलाकर तिवारी

भावों की भाषा हिन्दी हूँ।

मैं आर्य कुल की भाषा हूँ,
फारसी की दी परिभाषा हूँ।
राष्ट्रभाषा की एक आशा हूँ,
जन–मानस की अभिलाषा हूँ।।
अपभ्रंश से मेरा उद्भव है,
मेरी नींव में तत्सम्–तद्भव है।
पद्य–दोहा मेरा शैशव है,
वीर गाथा मेरा वैभव है।।
भारत की वाचिक पूंजी हूँ,
मैं विश्व मंचों से गूँजी हूँ।
भारत माँ की मैं बिन्दी हूँ,
भावों की भाषा हिन्दी हूँ।।
मेरा लाड़– लड़ाया सिद्धों ने,
योगी वज्रयानी बौद्धों ने।
धारसेन के शिलालेखों ने,
देवसेनी जैन उल्लेखों ने।।
मेरा मान बढ़ाया वीरों ने,
खुमाण भोज हम्मीरों ने।
चन्द्र बरदाई के प्राणों ने,
शब्द भेदी पृथ्वी बाणों ने।।
मैं कन्नौजी शौर सैनी हूँ,
बृज अवधि रजपूतानी हूँ।
लोकभाषा की पगडण्डी हूँ,
भावों की भाषा हिन्दी हूँ।।
मैं खड़ी मगधी बुन्देली हूँ,
तोता–ए–हिन्द की बोली हूँ।
खुसरो की मैं पहेली हूँ,
उर्दू की खास सहेली हूँ।।
मुझे गाया सन्त फकीरों ने,
सूर मीरा तुलसी कबीरों ने।
सूफियों के प्रेम प्रबन्धों ने,
सन्तों के भक्ति ग्रन्थों ने।।
मैं प्रेम की सूफी शैली हूँ,
भक्ति की मीठी बोली हूँ।
बहती गंगा–कालिन्दी हूँ,
भावों की भाषा हिन्दी हूँ।।
मैथिल की शब्दावली हूँ,
विद्यापति की पदावली हूँ।
कुतबन की मृगावती हूँ,
जायसी की पद्मावती हूँ।।
गुरुनानक की गुरुवाणी हूँ,
कबीर की बीजक वाणी हूँ।
मैं सूरसागर का पानी हूँ,
तुलसी की राम कहानी हूँ।।
भूषण की शिवा बावनी हूँ,
केशव की प्रिया, बावनी हूँ।
श्रृंगार रीति की बिन्दी हूँ।
भावों की भाषा हिन्दी हूँ।।
दयानन्द की शब्द शक्ति हूँ,
स्वभाषा की अभिव्यक्ति हूँ।
भारतेन्दु की देशभक्ति हूँ,
द्विवेदी की जागृति हूँ।।
शंकर की कामायनी हूँ,
विरह की छाया देवी हूँ।
मैं पंत की प्रेम प्रकृति हूँ,
निराला की छन्द–मुक्ति हूँ।।
संस्कृत कुल की बेटी हूँ,
देवनागरी में ही कहती हूँ।
प्राकृत रीति से बँधी हूँ,
भावों की भाषा हिन्दी हूँ।।
मैथिली की हूँ मैं भारती,
भारत मन उतारे आरती।
दिनकर की मैं जनक्रान्ति,
गाँधी की अहिंसा शान्ति।।
प्रेमचन्द की कर्मभूमि हूँ,
नागार्जुन की भावभूमि हूँ।
मुंशी की प्रभाव शैली हूँ,
माखन की ओजस्वी बोली हूँ।।
कुमारी कलम कहानी हूँ,
संग्रामी लक्ष्मी रानी हूँ।
मैं स्वतंत्रता की बिन्दी हूँ,
भावों की भाषा हिन्दी हूँ।।
रघुवीर की शब्द शोध हूँ,
अज्ञेय का नया प्रयोग हूँ।
महापण्डित का प्रयास हूँ,
आचार्य का इतिहास हूँ।।
हृदय की मुक्तअवस्था हूँ,
संविधान की व्यवस्था हूँ।
मैं संवादों की शाखा हूँ,
भारत की राजभाषा हूँ।।
मैं दक्कन भोज बघेली हूँ,
मैं हिन्दुस्तानी बोली हूँ।
मैं हमलों में भी जिन्दी हूँ,
भावों की भाषा हिन्दी हूँ।।
दुष्यन्त की पर्वत पीर हूँ,
करुणा में बलवीर हूँ।
वाहिद का फैंका भाला हूँ,
बच्चन की मधुशाला हूँ।।
'नीरज' की जीवन बगिया हूँ,
संतोष का प्यारा नगमा हूँ।
शैलेन्द्र का भाव गीत हूँ,
कवि बाल का गौरव गीत हूँ।।
प्रदीप की आँख का पानी हूँ,
लता की सुरीली वाणी हूँ।
मैं बॉलीवुड की हिन्दी हूँ,
भावों की भाषा हिन्दी हूँ।।
मैं गद्य में व्यापक वर्णन हूँ,
पद्य छन्दों में शब्द नूतन हूँ।
मैं विश्वासों का मुक्तक हूँ,
कविता की पावन पुस्तक हूँ।।
व्यंग्य में राग दरबारी हूँ,
हास्य में सब पर भारी हूँ।
मैं संवादों में राही हूँ,
गजलों में मेहर माही हूँ।।
पाण्डे की हल्दीघाटी हूँ,
मिश्र की चन्दनमाटी हूँ।
मैं जौहर ज्वाला चण्डी हूँ,
भावों की भाषा हिन्दी हूँ।।
आदर्श सत्यमेव जयते,
अभिवादन मेरा नमस्ते।
अभिनन्दन राम–राम से,
सम्बोधन मेरा प्रणाम से।।
कवि सम्मेलन के मंच से,
जन लोकतंत्र के मंच से।
गरजी हूँ अटल के कण्ठ से,
मैं यू.एन.ओ के मंच से।।
मैं सागर पार भी बोली हूँ,
मैं जय हिन्द की बोली हूँ।
जन–गण–मन की हिन्दी हूँ,
भावों की भाषा हिन्दी हूँ।।

लेखक- कवि धर्मराज भारत, जयपुर (भारत)

लाभकारी है शरद ऋतुचर्या

आयुर्वेद की ऋतुचर्या का वर्णन विश्व में सबसे प्राचीन है और इस बात के प्रमाण हैं कि इस विद्या को प्राचीन चीन एवं ग्रीक चिकित्सा पद्धतियों सहित विश्व की अन्य चिकित्सा पद्धतियों ने भारत से सीखा और अपनी पद्धति में समाहित किया। आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में ऋग्वेद, अथर्ववेद, चरकसंहिता और सुश्रुतसंहिता आदि में हितायु, सुखायु, स्वास्थ्य और चिकित्सा के लिये ऋतुचर्या, दिनचर्या, रात्रिचर्या, स्वस्थवृत्त, सद्वृत्त, आहार एवं रसायन के महत्त्व को बहुत विस्तृत रूप से प्रतिपादित व वर्णित किया गया था।

ऋतुचर्या का समकालीन महत्त्व आज भी कम नहीं हुआ, बल्कि यह हमारी बिगड़ती जा रही जीवनशैली के कारण होने वाले गैर-संचारी रोगों से बचाव का रास्ता है। इन सब बातों का ध्यान रखकर शरद ऋतु में स्वयं को दोष संचय से बचाते हुये स्वस्थ व सुखी रहा जा सकता है।

एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि आयुर्वेद में ऋतुचर्या किन सिद्धान्तों को ध्यान में रखकर तय की गयी होगी? लगभग ५००० साल पहले तय की गयी ऋतुचर्या क्या आज भी उपयोगी है? संक्षेप में देखें तो पहली बात यह है कि चरक शारीर स्थान में वर्णित आयुर्वेद का लोक-पुरुष-साम्य सिद्धान्त यह स्पष्ट करता है कि पुरुष लोक के समान है। इस सिद्धान्त के प्रकाश में देखने पर लोक या पृथ्वी के वातावरण का सीधा-सीधा प्रभाव मानव के स्वास्थ्य पर पड़ता है क्योंकि लोक और पुरुष में समानता होने से सामान्य-विशेष का सिद्धान्त कार्य करता है। अर्थात् समान भावों को समान भावों से मिलाने पर उस भाव की वृद्धि और असमान भावों को मिलाने पर ह्रास होता है। सत्य बुद्धि तभी प्रकट होती है या अकल तभी आती है जब स्वयं के अन्दर प्रकृति को व प्रकृति के अन्दर स्वयं को देखा जाये। यहाँ पर लोक से तात्पर्य पूरी दुनिया के वातावरण से है जिसमें छः धातुयें पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तथा आत्मा शामिल हैं। इस सूची में आत्मा का शामिल होना आश्चर्यजनक नहीं मानना चाहिये क्योंकि पौधे, प्राणी और सम्पूर्ण जीवन भी लोक में शामिल है। उपरोक्त साम्य के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण बात यह है कि जिस प्रकार चन्द्रमा, सूर्य, और वायु क्रम से विसर्ग, आदान, विक्षेप क्रियाओं से जगत् का धारण करते हैं ठीक उसी प्रकार सोमांश कफ, सूर्य जैसा पित्त तथा वायु देह का धारण करते हैं।

इन आयुर्वेदिक सिद्धान्तों को आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखा जाये तो पर्यावरण और पारिस्थितिक तंत्र के साथ मानव के रिश्तों की अनवरत सार-सम्भाल या अनुकूलन ही ऋतुचर्या है। इसे साधारण शब्दों में यों समझें कि यदि हवा, पानी, तापक्रम, मिट्टी, पेड़-पौधों में ऋतु के अनुसार परिवर्तन होते हैं तो हमें भी उसके अनुसार जीवन-शैली और खान-पान और पहनावे में परिवर्तन करना पड़ता है। यह परिवर्तन या अनुकूलन ही धातुसाम्य रखता है। यही अनागत रोगों का प्रतिकार या विकार-अनुत्पत्ति में सहायक है।

संहिताओं में उपलब्ध जानकारी हालांकि लगभग काफी पुरानी है, किन्तु इसका वैज्ञानिक महत्त्व आज भी कम नहीं

हुआ है। कुछ जानकारी या ऋतुचर्या निर्देश ऐसे भी हैं जिनकी समकालीन सार्थकता को सावधानीपूर्वक समझना आवश्यक है। यहाँ प्रारम्भ में ही यह बताना आवश्यक है कि ऋतुचर्या के पालन का अर्थ यह नहीं है कि आयुर्वेदोक्त दिनचर्या, रात्रिचर्या, स्वस्थवृत्त या सद्वृत्त आदि से छुटकारा मिल गया। शरद ऋतुचर्या का तात्पर्य यह है कि दिनचर्या और रात्रिचर्या में शरद ऋतु में यहाँ बताये समुचित परिवर्तन करना उपयोगी है।

शरद ऋतु के लिये सबसे उपयुक्त भोजन को देखें तो कषाय, मधुर और तिक्त रस, लघु, शीतवीर्य तथा पित्त को शान्त करने वाले अन्न पान का भूख लगने और पूर्व में खाया भोजन पच जाने के बाद, मात्रा-पूर्वक सेवन करना चाहिये। शरद ऋतु के लिये सबसे उत्तम खाद्य पदार्थों में दूध, गुड़, मधु या शहद, शालि-चावल, अगहनी-चावल, मूंग, जौ, गेहूँ, मिश्री, खांड, पुराने अन्न, आँवला और परवल शामिल हैं। परन्तु सबसे अधिक यह ध्यान रखना आवश्यक है कि ऋतु चाहे जो हो आहार अच्छी तरह भूख लगने पर सम्यक् मात्रा में ही खाना उपयोगी है। किसी भी ऋतु के दौरान उत्पन्न होने वाले फलों का आहार भी उस ऋतु के लिये सर्वोत्तम है। आधुनिक वैज्ञानिक अध्ययनों की सलाह यह है कि फल प्रतिदिन और पर्याप्त मात्रा में लेना स्वास्थ्य के लिये लाभदायक है।

शरीर में संचित पित्त संशोधन के लिये तिक्त घृत का पान और जरूरी हो तो आयुर्वेदाचार्यों की सलाह और देखरेख में रक्तमोक्षण उपयोगी रहता है। इस प्रक्रिया से वर्षा ऋतु के दौरान संचित हुये पित्त का शरीर से निर्हरण हो जाता है। शरद ऋतु में कुछ ऐसे अपथ्य हैं जिनसे बचना भी आवश्यक है। मुख्य बात यह है कि ओस, क्षार, ठूँस-ठूँस कर खाने, दही, तेल, वसा, बहुत गर्म दूध, तीक्ष्ण मदिरा, दिन में सोना और पुरवाई हवा से बचना चाहिये। शरद ऋतु में अतितीक्ष्ण, अम्ल, उष्ण पदार्थ, दिन में सोना या धूप में देर तक बैठना, रात में जागना तथा अधिक सहवास आदि ठीक नहीं होता। शरद ऋतु में हालांकि धूप सेंकना अच्छा लगता है, किन्तु धूप में बहुत देर तक बैठना स्वास्थ्य के ठीक नहीं होता। हाँ, विटामिन डी की कमी को अवश्य धूप में थोड़ी देर रहकर पूरा किया जा सकता है। समुचित और सीमित संख्या में व्रत भी रखे जाना उपयोगी होता है।

पेय पदार्थों में स्वच्छ निर्मल जल तो सभी ऋतुओं में उत्तम है। ऐसा पानी जिसमें चन्द्रमा की किरणें पड़ी हों, जो मलरहित, साफ-सुथरा हो और प्रसन्नता देने वाला हो, वही पीने में उपयोग करना चाहिये। ऐसा जल जो दिन के समय सूर्य की किरणों के तेज से तप्त और रात के समय चन्द्रमा की किरणों से शीत हुआ हो, विष व विषाणु मुक्त तथा पवित्र हो, उसे हंसोदक कहा जाता है। यह जल पीने के लिये सर्वश्रेष्ठ है। ऐसे जल में स्नान और डुबकियाँ लगाना भी अमृत की तरह फलदायी है। इस प्रकार का जल सर्दी-गर्मी नहीं करता है। कमल और उत्पल से युक्त तालाब में तैरना, रात्रि के शुरूआत में चन्दन, खस तथा कपूर का लेप लगाकर, मोतियों या श्वेत पुष्प की मालायें धारण कर, साफ सुथरे वस्त्र पहनकर, चूने से पूते हुये भवन की उपरी छत पर बैठकर धवल चाँदनी का आनन्द लेना चाहिये।

एक प्रश्न यह उठता है कि अन्य ऋतुओं की भाँति शरद ऋतु में भी विशेष शोधन का प्रावधान क्यों है? जैसा कि पूर्व में कहा गया है, वर्षा ऋतु में संचित पित्त का संशोधन न किया जाये तो यह बीमारी का कारण बनता है। इसीलिये युक्तिपूर्वक तिक्त घृत का सेवन तथा रक्तमोक्षण उपयोगी होता है। वर्षा ऋतु में शरीर वर्षाकालीन शीत का अभ्यस्त होता है। वर्षा ऋतु में पानी से भीगे हुये शरीर में पित्त का संचय होता रहता है। ऐसे शरीर पर जब सहसा शरद ऋतु के सूर्य की किरणें पड़ती हैं तो शरीर के अवयवों के संतप्त होते ही वर्षा ऋतु में संचित हुआ पित्त शरद ऋतु में कुपित हो जाता है। अतः पित्त-जनित विकारों से बचने के लिये तिक्त घृत का सेवन, विरेचन तथा यथावश्यक रक्तमोक्षण कराना चाहिये।

आधुनिक वैज्ञानिक परिपेक्ष्य में देखने पर स्पष्ट होता है कि शरद ऋतु में प्रायः हृदयघात, अस्थमा का प्रकोप, चमड़ी में रूखापन, जोड़ों में दर्द, क्रोनिक ब्रोंकाइटिस आदि प्रमुख समस्यायें होती हैं। शरद ऋतु में एक तरफ तो

उच्च कैलोरी वाला तरमाल खाने की आदत और दूसरी तरफ शारीरिक व्यायाम आदि में कमी भी हानि पहुँचाते हैं। विशेषकर ठण्ड के कारण रजाई में घुसे रहने या सोफे में धंसे रहने के कारण रक्त संचरण में कमी आती है, आलस्य बढ़ता है तथा चर्बी बढ़ती है। शरद ऋतु में फैट-सेल्स के विशेष तरीके से व्यवहार के कारण शरीर में दर्द, संक्रमण, और व्याधिक्षमत्व में कमी जैसी समस्यायें हो सकती हैं। अतः समुचित आहार-विहार, स्वस्थवृत्त, सद्वृत्त, दिनचर्या एवं रात्रिचर्या का समुचित पालन करना आवश्यक होता है। शरद ऋतु में वायरल संक्रमण से बचने के लिये अणुतेल का प्रतिमर्श नस्य लेना तथा एलरकैल, कोल्डकैल, जैरलाईफ जैसी औषधियाँ और रसायन आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से लेते रहने पर बीमार पड़ने की आशंका बहुत कम हो जाती है।

समकालीन वैज्ञानिक अध्ययनों और अनुभवजन्य-ज्ञान से स्पष्ट होता कि वर्तमान समय में लोगों की दिनचर्या, रात्रिचर्या या ऋतुचर्या तो गड्डमड्ड हो चुकी है, साथ ही प्रज्ञापराध या असात्म्येन्द्रियार्थ संयोग से मुक्ति पाना भी लोगों को कठिन हो रहा है। ऐसी स्थिति में शरद ऋतु में केवल पित्त ही नहीं, बल्कि वात व कफ भी भड़के रहते हैं। हम त्रिदोष-भड़काऊ जीवनशैली के आदी हो रहे हैं। इसलिये शरद ऋतु में शरीर को स्वस्थ रखने के लिये केवल पित्त-नियामक और संक्रमण-मुक्त जीवनशैली से काम नहीं चलता। अब तो सदैव और सबसे उत्तम यही है कि चिकित्सा में कुशल आयुर्वेदाचार्यों की सलाह से त्रिदोष-नियामक आहार-विहार और रसायन आदि का प्रयोग सभी ऋतुओं में करते रहा जाये।

– डॉ. दीपनारायण पाण्डेय

लेखक राजस्थान सरकार में पर्यावरण सचिव हैं।

पूरा नाम–
चलभाष–

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ०८/२१

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या–

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (एकादश समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	च १	■	२	व २	२	■	३	रा ३	३
■	४	र्या ४	४	र्त्त ४	■	५	ज ५	५	त्री ५
६ द	६	■	७	७ यं	७	व ७	■	८	न ८

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. कितने सहस्र वर्ष पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई भी मत नहीं था?
२. आयावर्त्त भूमि को कौन सी भूमि कहा जाता है?
३. शल्य किस देश का राजा था?
४. सृष्टि के आदि में आर्य लोग कहाँ आकर बसे थे?
५. राजकर्मों का विचार करने वाला क्या कहाता है?
६. आर्यों से भिन्न मनुष्यों का क्या नाम है?
७. किस राजा से लेकर पाण्डव पर्यन्त आर्यों का चक्रवर्ती राज्य रहा?
८. भगदत्त कहाँ का राजा था?

''विस्तृत नियम पृष्ठ १६ पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।''

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ दिसम्बर २०२१

कथा सरित

बेला बोस

किसी प्रसिद्ध व्यक्ति के नाम पर किसी गली, पार्क, बस स्टेशन या रेलवे स्टेशन का नाम रखे जाने का मतलब होता है, उनके काम और योगदान को सम्मान देना। भारत के लगभग हर शहर, कस्बे और यहाँ तक कि विदेशों में भी महात्मा गाँधी के नाम पर एक सड़क है। अकेले भारत में ही उनके नाम पर ६० से अधिक सड़कें हैं।

लेकिन एक दो मामलों को छोड़ दें, तो महिलाओ के नाम पर बमुश्किल ही कोई सड़क या किसी जगह का नाम नजर आएगा। पूर्वी रेलवे भी काफी लम्बे समय तक इसी परम्परा को निभाता रहा। अपनी मिट्टी के सपूतों को श्रद्धांजलि देने के लिए, उनके नाम पर स्टेशन का नाम रखा जाता है।

हालांकि सन् १९५८ में थोड़ा बदलाव लाते हुए, भारतीय रेलवे ने देश की एक बेटी को श्रद्धांजलि देने का फैसला किया, और उनके नाम पर हावड़ा जिले (पश्चिम बंगाल) में एक स्टेशन का नाम 'बेला नगर रेलवे स्टेशन' रखा। बेला मित्रा, ऐसा सम्मान पाने वाली भारतीय इतिहास की पहली महिला बनीं।

नेताजी की भतीजी थीं बंगाल की 'झांसी रानी'

सन् १९२० में, कोडालिया के एक सम्पन्न परिवार में जन्मी बेला को बेला मित्रा, अमिता या बेला बोस के नाम से जाना जाता था। उनके पिता सुरेन्द्र चन्द्र बोस, नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के बड़े भाई थे। बेला, प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी 'नेताजी' की भतीजी थीं।

बेला और उनकी छोटी बहन इला बोस के लिए नेताजी हमेशा प्रेरणा का स्रोत बने रहे। जब १९४१ में, नेताजी को नजरबन्द किया गया था, उस समय वहाँ से उन्हें भगाने में बेला ने प्रमुख भूमिका निभाई थी। बहुत कम उम्र में बेला ने खुद को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ लिया था। साल १९४० में, रामगढ़ में कांग्रेस विधानसभा छोड़कर उन्होंने नेताजी के साथ जुड़ने का फैसला किया।

जब भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) का गठन हुआ, तो उन्होंने 'झांसी रानी' ब्रिगेड की कमान संभाली। उनके पति हरिदास मिश्रा भी, उनकी तरह क्रान्तिकारी थे। वह एक गुप्त सेवा सदस्य के रूप में आईएनए में शामिल हुए और बाद में उन्हें खुफिया प्रमुख बना दिया गया।

देश के लिए, जोखिम में डाली जान

बेला को आईएनए के विशेष अभियान की देख-रेख के लिए कलकत्ता (अब कोलकाता के रूप में जाना जाता है) भेज दिया गया था। उन्हें नेशनलिस्ट ग्रुप के साथ रेडार के अन्तर्गत होने वाले कम्यूनिकेशन का प्रभारी बनाया गया था। इनमें से एक ऑपरेशन में, आईएनए ने भारत में पूर्व एशिया से लेकर देश के उत्तर पूर्वी हिस्से तक गुप्त सेवा दल की तैनाती की।

हरिदास, इस ऑपरेशन के प्रमुख सदस्य थे, लेकिन वह ब्रिटिश सरकार द्वारा पकड़े गए। इसके बाद, बेला ने इस ऑपरेशन की कमान सम्भाली और इसे सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई। वह, सदस्यों के साथ संचार की निगरानी करती थीं, और उनके तैनाती और आवास का कार्यभार भी सम्भालती थी। उन्होंने कई प्रमुख क्रान्तिकारियों को सुरक्षित जगह भेजने के लिए अपनी शादी के गहने तक बेच दिए थे।

सन् १९४४ में, उनकी मदद से एक गुप्त प्रसारण सेवा की स्थापना भी की गई। उन्होंने रेडियो ऑपरेटर्स और जासूसों की एक टीम का नेतृत्व किया, जो भारत और सिंगापोर के बीच गुप्त संचार स्थापित करने के लिए अपने स्वयं के ट्रांसमीटर और रिसीवर स्थापित करते थे। इस चैनल को लगभग एक साल तक दोनों देशों के बीच, महत्वपूर्ण सूचनाओं के आदान-प्रदान के लिए सन्देश भेजने की अनुमति मिली थी। इन सभी कामों को बेला कलकत्ता से अकेले ही सम्भालती थीं। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के गुमनाम नायकों में से एक बेला, आईएनए का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थीं। उन्होंने देश के लिए अपनी जान को जोखिम में डाल दिया था।

दूसरे विश्व युद्ध के बाद उनके पति हरिदास के साथ तीन अन्य क्रान्तिकारियों पबित्रा रॉय, ज्योतिष चन्द्र बोस और अमर सिंह पर राजद्रोह का आरोप लगाया गया और उन्हें देशद्रोही करार दे दिया गया। इसके बाद, सन् १९४५ में, मनमाने ढंग से उन्हें मौत की सजा सुना दी गई। इन सबको बचाने के लिए बेला ने, महात्मा गाँधी से मदद लेने के लिए पुणे तक का सफर तय किया।

उन्होंने सजा को कम करने के लिए भारत के वायसराय लॉर्ड वेवेल को भी एक पत्र लिखा, और अतंतः वह मृत्यु की सजा को आजीवन कारावास में बदलवाने में कामयाब हो गईं। स्वतंत्रता मिलने के बाद इस सजा का कोई मतलब नहीं था।

भारत की आजादी के बाद, बेला के पति को कारावास से रिहा कर दिया गया। उनके साथ और भी कई क्रान्तिकारियों को रिहा किया गया था। इसके बाद, जहाँ हरिदास कांग्रेस पार्टी में शामिल हुए और उन्हें विधानसभा का उपाध्यक्ष बना दिया गया। वहीं, बेला ने राजनीति से दूर रहने का फैसला किया।

बेला ने राजनीति के बजाय, विभाजन के कारण हुई हिंसा से प्रभावित लोगों की मदद करने का फैसला किया। वह हमेशा निस्वार्थ भाव से जनता की सेवा करना चाहती थीं। उन्होंने पश्चिम बंगाल में शरणार्थियों की सहायता के लिए, सन् १९४७ में 'झांसी रानी रिलीफ टीम' नाम का एक सामाजिक संगठन बनाया। इसका सारा काम बेला ही सम्भालती थीं।

उनका काम भारत के सामाजिक ताने-बाने के कारण मन और शरीर पर लगे उन घावों को ठीक करना था, जो विभाजन के दौरान लोगों को मिले थे। पूर्वी पाकिस्तान से विस्थापित होकर, भारत आए लाखों शरणार्थियों की वह हर तरह से मदद कर रही थीं।

अन्तिम सांस तक करती रहीं सेवा

अभयनगर की बेली दन्कुनी लाइन पर भी बेला ने शरणार्थी शिविर लगाया था। यहाँ, वह दूसरे देश से आए शरणार्थियों के पुनर्वास की देख-रेख के लिए रुकी थीं। बेघरों के लिए उनके द्वारा किए गए प्रयासों को श्रद्धांजलि देने के लिए पूर्वी रेलवे ने, अभय नगर में उसी हावड़ा वर्धमान लाइन के रेलवे स्टेशन का नाम बदलने का फैसला किया, जहाँ पहले उनका शरणार्थी शिविर था। वह जुलाई १९५२ में, अपनी अन्तिम सांस तक जनता की सेवा करती रहीं।

हालांकि उनकी कहानी अभी भी अनछुई और इतिहास के पन्नों में कहीं खोई हुई है। लोग बेला के बारे में ज्यादा नहीं जानते। लेकिन फिर भी यह सच नहीं बदल सकता कि उन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर देश की सेवा की, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियाँ एक आजाद और स्वतंत्र देश में सांस ले सकें।

मूल लेखः- अन्नया बरुआ
संपादनः अर्चना दुबे

समाचार

आर्य समाज, हापुड़ के प्रधान नरेन्द्र व मंत्री बने अनुपम आर्य

आर्य समाज, हापुड़ का वार्षिक निर्वाचन २०२१-२०२२ के लिए पूर्व प्रधान आनन्द प्रकाश आर्य व विकास अग्रवाल के प्रयास से निर्विरोध सम्पन्न हुआ। प्रधान नरेन्द्र कुमार आर्य, मंत्री अनुपम आर्य, कोषाध्यक्ष मंगल सेन गुप्त, महिला प्रधान शशि सिंघल, महिला मंत्री पुष्पा आर्या, कोषाध्यक्ष राजप्रभा आर्य तीसरे वर्ष लगातार निर्वाचित हुए। उपप्रधान चमन सिंह सिसोदिया, सुरेन्द्र गुप्ता कबाड़ी, सुन्दर लाल आर्य, उपमंत्री संजय शर्मा, राकेश गुप्ता कबाड़ी, सुन्दर कुमार आर्य, उपकोषाध्यक्ष अजय गोयल कबाड़ी, पुस्तकालयाध्यक्ष सुरजीत सिंह, प्रतीक गोयल कसेरा, महिला पुस्तकालयाध्यक्ष मंजुला आर्य, रेखा गोयल निर्वाचित हुए।

उधर अन्तरंग सभा सदस्य बिजेन्द्र गर्ग, विनेश गर्ग, सुरेश सिंघल, इन्दुभूषण मित्तल, मुकेश शर्मा, वीना आर्य, अलका अग्रवाल, प्रतिभा भूषण, माया आर्य, विजयपाल सिंह आर्य, नरेन्द्र शर्मा चुने गए।

सभी निर्वाचित अधिकारियों ने महर्षि दयानन्द के कार्यों को पुनः निष्ठा के साथ सभी सदस्यों का सहयोग लेकर कार्य करने का आश्वासन दिया।

अमृत महोत्सव एवं रजत जयन्ती समारोह

अनेकानेक गुरुकुलों को अपने पुरुषार्थ एवं तप के द्वारा अंकुरित व पल्लवित करने वाले पूज्य स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती के अमृत महोत्सव एवं उनके द्वारा स्थापित गुरुकुल मँझावली के रजत जयन्ती समारोह के अवसर पर वर्षभर एक व्याख्यान माला का ऑनलाइन आयोजन किया गया है जिसमें प्रत्येक शनिवार एवं रविवार सायंकाल के समय विभिन्न विद्वानों को आमंत्रित कर उनके प्रवचन कराये जाते हैं। दिनांक ४ सितम्बर २०२१ (शनिवार) सायं ७ बजे से सम्पन्न कार्यक्रम में आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ. ज्वलन्त कुमार जी का व्याख्यान आर्य समाज की स्थापना तिथि को लेकर के हुआ। जिसमें उन्होंने प्रचुर प्रमाणों के साथ चैत्रशुक्ला प्रतिपदा को ही आर्य समाज का स्थापना दिवस प्रमाणित किया। इस अवसर पर श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के अध्यक्ष श्री अशोक आर्य ने सारस्वत अतिथि के रूप में अपने उद्बोधन में समस्त प्रकार की विषमाताओं से रहित समाज के निर्माण में महर्षि द्वारा प्रतिपादित आर्ष गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के महत्व को उकेरित किया। कार्यक्रम का संचालन गुरुकुल पौन्धा के संचालक आचार्य डॉ. धनन्जय जी ने सफलतापूर्वक किया।

आर्य समाज ने किया औषधीय पौधों का वितरण

आर्य समाज के सेवा एवं यज्ञ के कार्य सभी के लिए प्रेरणा स्रोत हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती सेवा समिति, कोटा के तत्वावधान में ८ सितम्बर को आर्य समाज विज्ञान नगर, परिसर में औषधीय पौधों का वितरण किया गया। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि स्थानीय पार्षद विवेक मित्तल रहे तथा कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री ओमप्रकाश तापड़िया प्रधान आर्य समाज, तिलकनगर ने की। वहीं श्री अर्जुनदेव चडड्ढा प्रधान उपप्रतिनिधि सभा कोटा संभाग विशिष्ठ अतिथि के रूप में उपिस्थत थे। कार्यक्रम संयोजिका रूपा खण्डेलवाल ने बताया कि चार औषधीय पौधों का सेट जिसमें अश्वगन्धा, तुलसी,गिलोय एवं कालमेघ को गमले में लगाकर लोगों को दिया गया। ये औषधीय पौधे राजकीय नर्सरी, देवली से प्राप्त किए गए थे।

राजस्थान के अलवर निवासी व हरियाणा में अतिरिक्त जिला व सेशन न्यायाधीश अनुभवशर्मा को भारत सरकार ने इनकम टैक्स अपीलेट ट्रिब्युनल, (आईईटीएटी)में राष्ट्रीय ज्युडिशियल सदस्य नियुक्त किया है। भारत सरकार के अवर सचिव आनन्द सिंह ने यह जानकारी दी। अनुभव शर्मा को ज्युडिशियल मेम्बर बनाया गया है। यह अति महत्वपूर्ण पद है जिसकी नियुक्ति मंत्रिमंडल के चुनिन्दा मंत्रियों की कमेटी करती है। इसका मुख्यालय दिल्ली स्थित देश के मुख्य आयकर भवन में होगा। जज अनुभव शर्मा हरियाणा जज एसोसिएशन के अध्यक्ष भी हैं। चण्डीगढ़ में रहते इनके फैसले बड़ी चर्चा में रहे। श्रीशर्मा की माता श्रीमती कमलाशर्मा शिक्षाविद् हैं। वे आर्य कन्या स्कूल की निदेशक हैं। अलवर के लिए आर्य कन्या विद्यालय एवं आर्य समाज के लिए यह गौरव की बात है। श्रीमती कमलाशर्मा एवं उनके परिवार के सदस्यों को शुभकामनाएँ।

- प्रदीप आर्य

शत वर्ष प्रवेश पर डॉ. माथुर का सम्मान

आर्यसमाज हिरण मगरी, उदयपुर के वरिष्ठतम सदस्य डॉ. सोहन

लाल जी माथुर का आज सौवें जन्मदिवस पर सत्संग भवन में सम्मान किया गया। उपप्रधान कृष्ण कुमार सोनी ने तिलक लगा नारियल भेंट किया। प्रधान भंवर लाल आर्य ने उपरणा पहनाकर एवं श्रीमती ललिता मेहरा ने शॉल भेंट कर स्वागत किया। इस अवसर पर डॉ. शारदा गुप्ता ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऐसे शताब्दी पुरुषों के सान्निध्य से समाज ऊर्जामय होता है। श्रीमती राधा त्रिवेदी एवं श्रीमती सरला गुप्ता ने इस अवसर पर भजन प्रस्तुत किये। कार्यक्रम का संचालन मंत्री श्री संजय शाण्डिल्य ने किया।

- ललिता मेहरा, उपप्रधान

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी की पूज्य बाबू दीनदयाल जी गुप्त ने, जैसा कि आश्वासन दिया था, न्यास में जनरेटर लगाने के लिए ₹४००००० का सात्विक अनुदान न्यास को दिया है ।

पहले बिजली ना आने पर दर्शकों को वापस कर दिया जाता था, अब जबकि संस्कार वीथिका, थिएटर सभी चालू हो जाएँगे तब कभी बिजली नहीं आएगी तो जनरेटर की सहायता से सभी प्रकल्प चल सकेंगे और दर्शकों को लौटाने की नौबत नहीं आएगी।

इस बात को सम्भव बनाने हेतु माननीय बाबू जी ने जो कृपा की है उसके लिए मैं अपनी ओर से और आप सभी न्यासी बन्धुओं की ओर से उनके श्री चरणों में आभार प्रकाशित करता हूँ और आशा करता हूँ की ऐसी ही आत्मीयता आपकी न्यास के प्रति बनी रहेगी और यह न्यास उन्नति के पथ पर अग्रसर होता रहेगा एक बार पुनः धन्यवाद।

गाय के गोबर से बनते हैं इनके सभी प्रोडक्ट्स, इस्तेमाल के बाद बन जायेगा खाद

जयपुर के रहनेवाले भीम राज शर्मा और उनकी बेटी ने पर्यावरण की समस्याओं को ध्यान में रखकर ही एक नवाचार किया है। वह पिछले पाँच सालों से गोबर और कॉटन वेस्ट का उपयोग पेपर और दूसरी स्टेशनरी बनाने में कर रहे हैं। उन्होंने गोशाला को सस्टेनेबल बनाने के साथ-साथ, लोगों को ईको-फ्रेंडली प्रोडक्ट्स उपलब्ध कराने के उद्देश्य

से इस काम की शुरुआत की थी। तकरीबन ७० तरह के प्रोडक्ट्स बना रहे हैं। गौमूत्र और गाय के गोबर को हम गोशाला से खरीदते हैं, ताकि गोशाला भी आत्मनिर्भर बन सके।

बेटी के आईडिया से प्रेरणा लेकर, उन्होंने पेपर बनाने का काम शुरू कर दिया। इस काम में उन्होंने अपने एक दोस्त की मदद ली, जो हैंडमेड पेपर बनाता था। गोबर से बने इस पेपर को बिल्कुल ही मैन्युअली बनाया जाता है।

उन्होंने बताया, 'हमारा यह पहला प्रयोग सफल रहा और आज इस ईको-फ्रेंडली पेपर पर आप डिजिटल प्रिन्टिंग भी कर सकते हैं। इसके बाद हमने धीरे-धीरे कई नए प्रोडक्ट्स बनाना शुरू किया और जनवरी २०१७ में हमने गौकृति नाम से अपने इस ईको-फ्रेंडली बिजनेस की शुरुआत की।'

इस पेपर को बनाने में बिल्कुल भी पानी का इस्तेमाल नहीं किया जाता। इसमें गाय के गोबर, कॉटन वेस्ट और गौमूत्र का उपयोग किया जाता है। सबसे पहले प्रोसेसिंग करके गोबर और कॉटन वेस्ट को मिलाया जाता है, जिससे एक बढ़िया लिक्विड तैयार होता है। इस लिक्विड को अलग-अलग फ्रेम में डालकर सेट किया जाता है, इस तरह बनी शीट को तकरीबन एक दिन तक सुखाया जाता है।

वह सफेद और रंगीन पेपर भी इसी तरह से तैयार करते हैं। पेपर को रंगीन बनाने के लिए नेचुरल कलर का उपयोग किया जाता है। उन्होंने बताया कि पीले रंग के पेपर के लिए हम हल्दी का उपयोग करते हैं, जिसके कारण चोट लगने पर ये पेपर बैंडेज का काम भी करते हैं। चूँकि इसमें हल्दी और गाय का गोबर होता है, तो यह घाव भरने के काम आता है।

पिछले पाँच सालों में जागृति और उनके पिता ने कई प्रयोग किए हैं। जागृति कहती हैं, 'जिन पेपर को रोल नहीं करना होता, हम उन पेपर में बीज डाल देते हैं। जैसे किसी बैग या फोल्डर आदि में ताकि उपयोग के बाद अगर आप इसे फेंके तो इसमें से पेड़ उग जाए।'

हाल ही में गौकृति ने ईको-फ्रेंडली सीड राखियाँ बनाई थीं, जिसे लोगों ने काफी पसन्द किया।

- साभार- बेटर इण्डिया

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - ०६/२१ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- ०६/२१ के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री रतन लाल राजौरा; निम्बाहेड़ा (राज.), श्री पुरुषोत्तम लाल मेघवाल; उदयपुर (राज.), श्री विनोद प्रकाश गुप्त; दिल्ली, श्री फूलसिंह यादव; मुरादनगर, डॉ. राजबाला कादियान; करनाल (हरियाणा)।

सत्यार्थ सौरभ के उपर्युक्त सभी सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नियम पृष्ठ 16 पर अवश्य पढ़ें।

योग के अंग

योग के अन्य अंग निम्न प्रकार हैं–

आसन– जिस आसन में अधिक से अधिक देर तक सुखपूर्वक बैठ सकें वह आसन योग साधना हेतु उत्तम है। अभ्यासपूर्वक उसकी सिद्धि करनी चाहिये।

प्राणायाम– श्वास-प्रश्वास की स्वाभाविक गति में विच्छेद रुकावट डाल देना प्राणायाम है पर यह विधिपूर्वक ही करना उचित है। अन्यथा अभ्यास लाभ के स्थान पर हानि पहुँचा सकता है। प्राणायाम का निरन्तर अभ्यास करते हुये चित्त को एकाग्र करने का अभ्यास ही योग में सहायक है।

प्रत्याहार– प्रत्याहार में प्रत्येक इन्द्रिय उसके बाह्य विषय से पृथक् हो शुद्ध चित्त की अनुगामिनी हो जाती है। इस समय चित्त किसी भी प्रकार के बाह्य प्रभाव से मुक्त हो जाता है।

धारणा– लक्ष्य विषय में एकाग्रभाव से चित्त को बाँधे रखना धारणा है। अधिकाधिक समय तक यह स्थिति योग साधना के अनुकूल है।

ध्यान– ध्यान में साधक ध्येय अर्थात् ईश्वर को छोड़ अन्य किसी भी पदार्थ न बाह्य न अन्तर, का स्मरण करते हुए तादात्म्य से उसी अन्तर्यामी (परमात्मा) के स्वरूप में मग्न हो जाता है।

समाधि– ध्यान के चरम उत्कर्ष का नाम समाधि है। जब ध्यान इतना प्रगाढ़ हो जाता है कि उसमें केवल ध्येय (परमात्मा) की ही ख्याति रहती है तब वह समाधिरूप हो जाता है।

योग और उपासना का फल

महाँ२।।ऽइन्द्रो यऽओजसा पर्जन्यो वृष्टिमाँ२।।ऽइव।
स्तोमैर्वत्सस्य वावृधे।
उपयामगृहीतोऽसि महेन्द्राय त्वैष ते योनिर्महेन्द्राय त्वा।।

– यजुर्वेद ७/४०

जैसे मेघ वर्षाकाल में अपने जल समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्हें बढ़ाता है, वैसे ही ईश्वर योग और उपासना में तन्मय योगी को सब ओर से बढ़ाता है।

इसी अष्टांग योग के मार्ग पर चलकर ब्रह्मानन्द की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त कोई मार्ग नहीं है। कोई Short cut नहीं है। जो ऐसा कहता है वह छलावा मात्र है।

उपासना के लाभ– उपरोक्त प्रकार से ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव को जानकर जो साधक उपासना में मग्न होता है उस पर ईश्वर के पवित्र हो गुणों का प्रभाव होने लगता है। वह स्वयं भी मनसा वाचा कर्मणा पवित्र हो, सदैव पाप कर्मों से विरत रह समस्त दुःखों से स्वयं को दूर कर लेता है तथा आनन्दघन के सान्निध्य से दुःखों में भी सुख की अनुभूति करने लगता है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज इस विषय में सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं- जैसे शीत से आतुर पुरुष का अग्नि के पास जाने से शीत निवृत्त हो जाता है वैसे परमेश्वर का सामर्थ्य प्राप्त होने से सब दोष, दुःख छूटकर परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के सदृश जीवात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव पवित्र हो जाते हैं, इसलिये परमेश्वर की स्तुति-प्रार्थना और उपासना अवश्य करनी चाहिये।

इससे इसका फल पृथक् होगा, परन्तु आत्मा का बल इतना बढ़ेगा कि वह पर्वत के समान दुःख प्राप्त होने पर भी न घबरायेगा और सबको सहन कर सकेगा। क्या यह छोटी बात है? (सप्तम समुल्लास)

अतएव निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि आज संसार की समस्त समस्याओं का एक ही समाधन है वह है उपरोक्त प्रकार से ईश्वरोपासना।

ईश्वर की इच्छा

ईश्वर में इच्छा है या नहीं प्रायः इस सम्बन्ध में चर्चा इस प्रकार होती है कि प्रतीत होता है कि जिस प्रकार जीव में इच्छा होती है वैसे ही परमेश्वर में भी इच्छा होती है। पर इस प्रकार की इच्छा का ईश्वर में होना सम्भव नहीं। इस विषय में महर्षि लिखते हैं-

'वैसी इच्छा नहीं, क्योंकि इच्छा भी अप्राप्त, उत्तम और जिसकी प्राप्ति से सुख विशेष होवे तो ईश्वर में इच्छा (कैसे) हो सके। न उससे कोई अप्राप्त पदार्थ, न कोई उससे उत्तम और पूर्णसुखयुक्त होने से सुख की अभिलाषा भी नहीं है। इसलिये ईश्वर में इच्छा का तो सम्भव नहीं, किन्तु ईक्षण अर्थात् सब प्रकार की विद्या का दर्शन और सब सृष्टि का करना कहाता है, वह ईक्षण है।'

– अशोक आर्य
सत्यार्थ प्रकाश भवन, नवलखा महल, गुलाब बाग

Dollar
Bigboss
PREMIUM INNERWEAR

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 October-2021 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2019-2021

जिस पुरुष वा स्त्री का विद्या, धर्म वृद्धि और सब संसार का उपकार करना ही प्रयोजन हो, वह विवाह न करे। जैसे पंचशिखादि पुरुष और गार्गी आदि स्त्रियाँ हुई थीं।

- सत्यार्थ प्रकाश, पंचम समुल्लास पृष्ठ १३६

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय- श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य
मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर